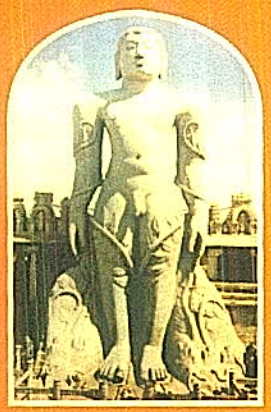

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

VOLUME : 6 ISSUE : 1 MUMBAI, JULY 2015 PAGES : 36 PRICE : ₹25

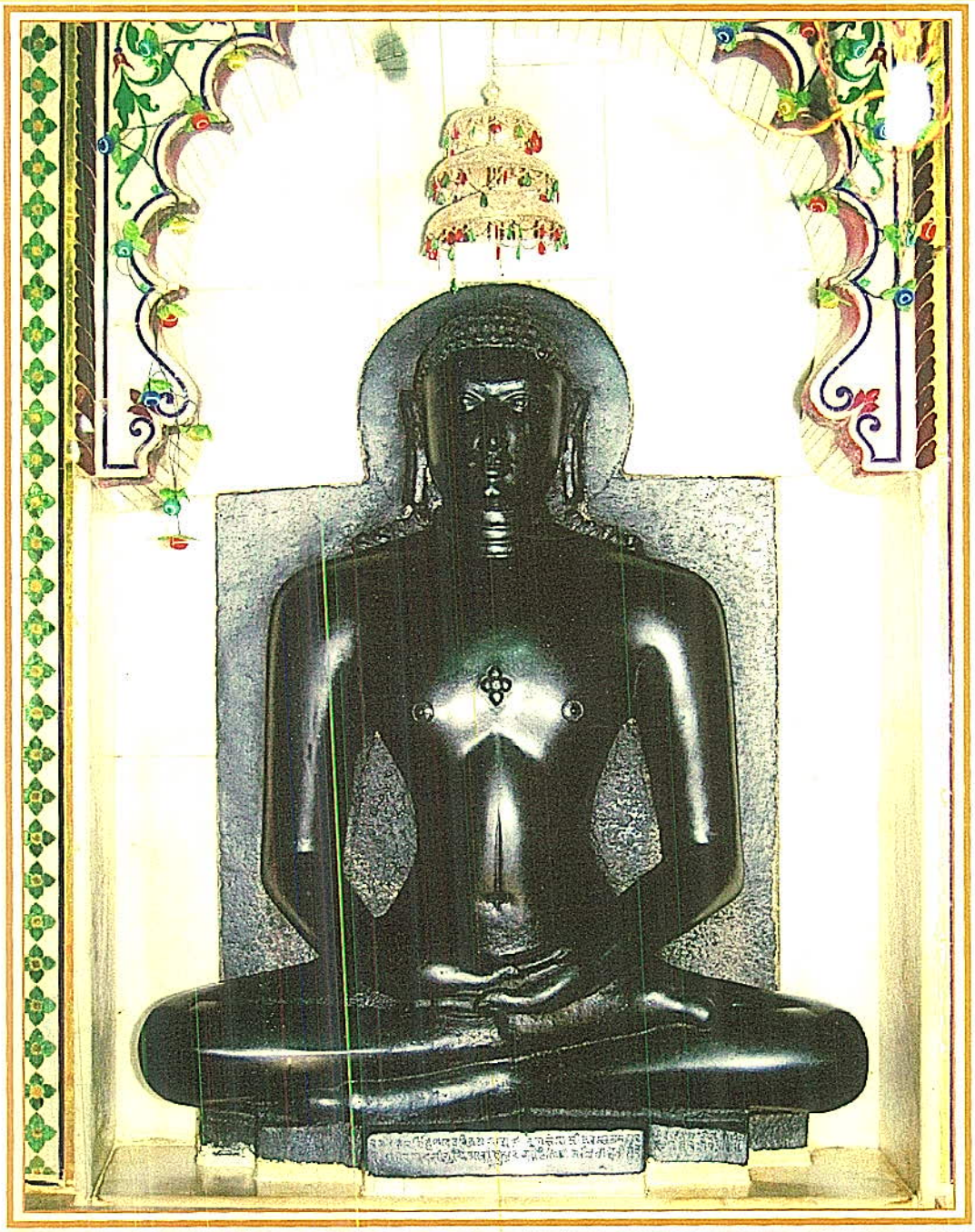

तीर्थंकर श्री १००८ मल्लिनाथ भगवान, शिरड सहापुर क्षेत्र-महाराष्ट्र

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्ष की कलम से

प्रिय साधर्मी बंधुओ,

जय जिनेन्द्र।

काले-काले मेघों से आकाश आच्छादित हो रहा है। कहीं रिमझिम, कहीं फुहारें और कहीं वर्षा की बौछारों ने तपती भूमि को सांत्वना दी है।

पूरे भारतवर्ष में श्रमण संघों के विहार, चातुर्मास स्थापना के पूर्व गतिमान हो रहे हैं। जैन धर्म की अक्षुण परंपरा के अनुसार श्रावक-श्राविकाएँ अपने-अपने पुण्य को तौलने-तलाशने में, श्रीफल अर्पण कर चातुर्मास स्थापना हेतु निवेदन कर रहे हैं। वर्तमान समय में जीवनयापन की रफ्तार कुछ ऐसी हो चुकी है कि हर व्यक्ति परेशान है। तनाव से ग्रस्त है बहुत जल्दी में सभी कुछ करना चाहता है। सर्दी हो- गर्मी हो या बरसात का मौसम हो दिनचर्या में कोई विशेष अंतर नहीं रह गया है। बारह महीनों में एक सी कार्यप्रणाली चल रही है। जीवन यंत्रवत् सा हो चला है।

न सोचने का वक्त है, न समझने की फुरसत है न चिंतन की कला है न जीवन के लक्ष्य का निर्धारण हो सका है। बस हवा के झोंकों में पत्तों की तरह उड़ते जा रहे हैं।

'सुबह होती है, शाम होती है,
जिंदगी यूं ही तमाम होती है''

संयुक्त परिवार की कड़ियां बिखर चुकी हैं, व्यक्ति अपनी जिम्मेवारियों का बोझ ठीक से नहीं सम्हाल पा रहा है, जिसके फलस्वरूप परिवार का स्वरूप पति-पत्नी के बीच सिमट कर रह गया है। बच्चे शिक्षा के बाद अपने कैरियर को बनाने के चक्कर में बूढ़े होते मां-बाप से अलग रहने को विवश हैं। इसी परिवारिक बिखराव की वजह से समाज की संगठन क्षमता भी प्रभावित हुई है और जैन समाज बिखराव की दिशा में अग्रसर है। **तीर्थाटन** की गम्भीर परंपरा **पर्यटन** में बदलती जा रही है। भोगवादी संस्कृति धार्मिक आचार-विचारों में प्रदूषण फैला रही है। **जिन आयतनों एवं तीर्थों की रक्षा-सुरक्षा में अपने ही सेंध लगाने से बाज नहीं आ रहे हैं।**

सिद्धक्षेत्रों, कल्याणक क्षेत्रों में जहां समाज नहीं है वहां की स्थिति तो और भी चिंतनीय है। **गिरनार जी सिद्धक्षेत्र** इसका जीता-जागता उदाहरण है। **बहुसंख्यक समाज के प्रबुद्ध लोग, राजनेता, वोट बैंक के चश्मे से अल्पसंख्यक जैन समाज के साथ हो रहे अन्याय को- अनदेखा कर रहे हैं।**

अनेक समन्वय बैठकों, प्रयासों के बावजूद भी अपेक्षित परिणाम दूर नजर आता है। आखिर क्या वजह है कि इतने वर्षों के पश्चात भी, श्री सम्मेदशिखरजी, श्री गिरनारजी, श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथजी, श्री केशरियाजी के विवाद नहीं सुलझ सके?

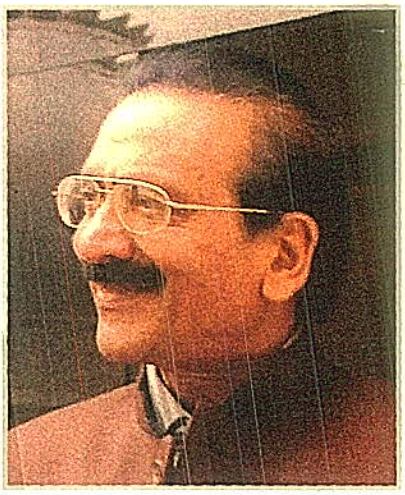

सम्पूर्ण जैन समाज को चाहे वे जैन धर्म की किसी भी शाखा के हों, आमना के हों, राष्ट्रीय मंच पर एकजुट होकर अपने अधिकारों की लड़ाई लड़नी होगी। अहिंसा, शाकाहार एवं जीवदया के सिद्धांतों को सर्वोपरि रखकर एकजुटता दिखानी होगी।

वर्तमान आपाधापी के समय में भी, यदि कोई हमारी दिनचर्या, जीवन जीने की शैली, आचार-विचार एवं चिंतन को गहराई से प्रभावित करता है तो वो हैं हमारे तपस्वी आचार्य, मुनिराज, आर्यिका माताएं एवं उनकी चर्या तथा उनका सान्निध्य।

'चातुर्मास स्थापना' एवं श्रमण चर्या समाज के वो सुनहले पृष्ठ हैं जो हमारे हृदयों को धर्माचरण के मोतियों से अलंकृत कर देते हैं। धर्म की ध्वजाएं भी नई गति एवं ऊर्जा से समाज को नये कर्तव्य बोध से जीवंत बना देती हैं।

सभी भाईयों-बहिनों से विनम्र अपील है कि अपने-अपने नगरों में 'चातुर्मास स्थापना' के कलशों के साथ एक कलश 'तीर्थरक्षा कलश' अवश्य स्थापित करें एवं गुरुओं के आशीष से उसकी राशि 'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' मुंबई को प्रेषित कर - तीर्थों की रक्षा में अपना स्तुत्य योगदान अवश्य दें।

ये बात हवाओं को बताये रखना
रोशनी होगी चिरागों को जलाये रखना
सब कुछ देकर जिसकी हिफाजत बुजुर्गों ने की
ऐसे तीर्थों को सदा दिल में बसाये रखना ।।

तीर्थों की रक्षा हमारा हमारा संकल्प है
तीर्थों का संरक्षण हमारा ध्येय है
तीर्थों का विकास हमारा प्रयास है ।।

सुधीर जैन

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 6 अंक 1 जुलाई 2015

परामर्श मण्डल

डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

संपादक

उमानाथ आर. दुबे
डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर (मानद्)

कार्यालय

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखको के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

अपील	5
चातुर्मास में एक कलश तीर्थ संरक्षण के लिए	6
जैनधर्म के उन्नीसवें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ भगवान्	8
धर्माराधना के लिए सुअवसर : चातुर्मास	11
विश्व - विभूति विद्यासागर	12
जैन धर्म यह विश्व का अनमोल रत्न - राजनाथ सिंह, गृहमंत्री	21
तमिलनाडु वैभव की एक झलक	22
महामस्तकाभिषेक का आयोजन फरवरी 2018 में	23
ऊर्जा महिला संभाग, मुंबई का खुला अधिवेशन सानंद सम्पन्न	24
महाराष्ट्र अंचल द्वारा क्षेत्रों का अवलोकन	27
बड़े बाबा का मंदिर निर्माण सही	30

तीर्थ अहिंसा धर्म का आयतन है ।

चातुर्मास कलश स्थापना के अवसर पर
'तीर्थरक्षा कलश' स्थापित करने की अपील

साधर्मी बन्धुओं,

हम सभी का यह परम सौभाग्य है कि वर्षाकाल के इन 4 महीनों में अहिंसा की सूक्ष्मता से जीने वाले हमारे साधु-संत हिंसा से बचने के लिए विहार करने से बचते हैं और चातुर्मास के इन दिनों में वे एक स्थान पर रहकर स्व-कल्याण के साथ-साथ जन-जन को सुखी, शांति और पवित्र जीवन की कला का प्रशिक्षण देते हैं। उनकी प्रेरणा से धर्म जागरण में वृद्धि होती है। चातुर्मास में उनके अमृतमयी वाणी से निकले हुए हर शब्द हमारी अंतरात्मा को झकझोर कर रख देते हैं और हमें बुराईयों से अच्छाईयों में, नफरत से प्रेम में, अधर्म का धर्म में, हिंसा का अहिंसा में, असत्य का सत्य में बदलने की कला सिखा देते हैं।

ऐसे सुमंगल पावन प्रसंग पर मैं आपका ध्यान दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके सम्यक विकास की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। आपको विदित ही है कि भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी इस कार्य में एक लम्बे समय से जुटी हुई है उसे अनेकों चुनौतियों एवं समस्याओं का सामना भी करना पड़ा है और यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि आप सभी के सहयोग एवं पूज्य गुरुवरों, आर्यिका माताओं के आशीर्वाद से हमें अभी तक पूरी सफलता मिली है। हमारे शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखरजी, श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र सिरपुर के केस अब निर्णायक दौर में माननीय सर्वोच्च न्यायालय में विचाराधीन हैं। जिसमें अंतरिक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र सिरपुर का केस अब कुछ ही दिनों में बोर्ड पर सुनवाई के लिए आ रहा है। आरपार की इस लड़ाई में तीर्थक्षेत्र कमेटी को अपना पक्ष प्रभावी ढंग से रखना है और विजय हासिल करनी है। हमारी संस्कृति की ये जीते-जागते स्मारक ही हमारी पहचान है। इन पर आये संकटों का हमें मिल-जुलकर सामना करना है।

आप जानते ही हैं कि विधिक प्रसंगों के निपटारों में समय शक्ति और धन तीनों का अधिकाधिक व्यय अपरिहार्य है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि धर्म और धर्मायतनों के प्रति कर्तव्य का पालन करने में जब-जब हम गृहस्थों ने प्रमाद किया है तब-तब हमारे आचार्यों और मुनिराजों ने अपनी प्रेरणा से समाज को अनुप्राणित करके हमारा मार्गदर्शन किया है। इस निर्णायक क्षणों में जहां बहुत से केसों का निपटारा होना है ऐसी स्थिति में सामाजिक मंगल के आह्लादकारी क्षणों में तीर्थक्षेत्र कमेटी को भी सम्मिलित करें और आपके यहां सम्पन्न होने जा रहे वर्षायोग स्थापना के अवसर पर एक तीर्थरक्षा कलश की स्थापना अवश्य कराएं और उस निमित्त जो भी धन संग्रह हो उसे भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई को प्रेषित कर अपने सहयोग एवं कर्तव्य का पालन करने की कृपा करें।

महामंत्री - भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई

क्रोध रूपी अग्नि, पुण्य रूपी रत्नों को जला देती है।

चातुर्मास में एक कलश तीर्थ संरक्षण के लिए

–कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती'

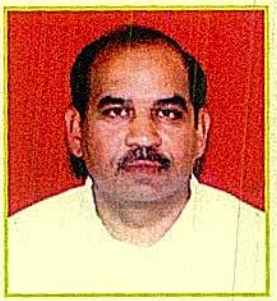

सम्पूर्ण भारतवर्ष में दिगम्बर जैन साधुओं द्वारा वर्षाकाल में चातुर्मास स्थापना के माध्यम से आत्मसाधना की जाती है। चातुर्मास आषाढ़ शुक्ल दसवीं अथवा आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी से प्रारंभ होकर कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी तक के लिए स्थापित किया जाता है। चातुर्मास स्थापना के समय वर्तमान में मंगलकलश स्थापित किये जाते हैं जिनकी संख्या 1, 3, 5, 7, 9, 11, 21 तक देखी जाती है। प्राचीन समय में साधुजन वन में निवास करते थे अतः वहाँ चातुर्मास मंगलकलश स्थापना जैसी कोई बात नहीं होती थी किन्तु वर्तमानकाल में यह परम्परा कब से और कहाँ से प्रारंभ हुई; कहा नहीं जा सकता। चातुर्मास कलश की स्थापना साधु के निमित्त से होती है और इसे स्थापित करने वाले श्रावक होते हैं; जो इस निमित्त धन–दान करते हैं। यह धन मंगलकार्यों में व्यय होता है। मेरा सम्पूर्ण आचार्यों, मुनियों, आर्यिकाओं से विनम्र निवेदन है कि वे इस बार के चातुर्मास में एक कलश तीर्थ संरक्षण के लिए भी स्थापित करवायें और उस कलश की स्थापना से प्राप्त राशि किसी तीर्थ स्थान या भारतवर्ष के तीर्थों का संरक्षण करने वाली भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के लिए भिजवाने हेतु प्रेरित करें। उनकी इस प्रकार की प्रेरणा से तीर्थ संरक्षण हेतु श्रावकों की विशेष भावना बनेगी और तीर्थों का विकास संभव हो सकेगा।

चातुर्मास की स्थापना जीव दया एवं धार्मिकता के प्रसार हेतु की जाती है। इसमें साधुजन तो आत्म साधना करते ही हैं, उनके साथ ही श्रावकों को भी गुरुभक्ति, आहार दान, वैयावृत्ति, स्वाध्याय, सामायिक, ध्यान जैसे उपक्रम करने की प्रेरणा मिलती है। यदि तीर्थ संरक्षण के लिए चातुर्मास कलश की स्थापना होगी तो निश्चित रूप से इससे धर्म तीर्थों की प्रभावना संभव होगी। आज समय आ गया है कि जब सभी साधु तीर्थ संरक्षण के लिए प्राथमिकता दें। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री सिंघई सुधीर जैन ने चर्चा में बताया कि पूर्व में भारतवर्ष के अनेक स्थानों पर चातुर्मासकाल में तीर्थक्षेत्र कमेटी के लिए विभिन्न समाजों की ओर से दान राशि भिजवायी जाती थी, इसके लिए अलग से कलश स्थापना या दानपेटी की स्थापना की जाती थी। इस श्रेष्ठ परम्परा को सुचारु रूप से चलाने की आवश्यकता है।

चातुर्मास में एक ओर सन्तों की आत्मसाधना के माध्यम से आत्महित की पुष्टि होती है तो दूसरी ओर श्रावकों को उनकी प्रेरणा से व्यसनमुक्ति, निर्दोष आहार–विहार आदि की शिक्षा भी मिलती है। अतः आ[illegible] साधना के साथ शरीर को विकारों से मुक्ति के लिए भी कुछ उपक्रम चातुर्मास में किये जाने चाहिए। भगवती आराधना में आचार्य शिवार्य ने आराधना का स्वरूप इस प्रकार बताया है–

उज्जोवण–मुज्जवणं णिव्वहणं साहणं च णिच्छरणं।
दंसण – णाण – चरित्त – तवाणमाराहणा भणिया।।

अर्थात् सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान, सम्यक्चारित्र और सम्यक्तप के उद्योतन, उद्यवन, निवर्हन, साधन और निस्तरण को आराधना कहा गया है। इन पाँच का स्वरूप इस प्रकार है–

1. सम्यग्दर्शनादि का निरतिचार, निर्दोष पालन कर उन्हें निर्मल बनाये रखना उद्योतन है।
2. आत्मा में बार–बार सम्यग्दर्शनादि की परिणति क[illegible] अर्थात् बार–बार तदनुरूप परिणमन करना उद्यवन है।
3. उपसर्ग, परीषहादि होने पर स्थिर चित्त हो सम्यग्दर्शनादि से च्युत न होना, निराकुलतापूर्वक उन्हें धारण किये रहना निर्वहन है।
4. सम्यग्दर्शनादि से चित्त के हटने पर पुनः उसमें उपयोग स्थिर करना साधन है।
5. अन्य भव में भी सम्यग्दर्शनादि को साथ ले जाना या आमरण सम्यग्दर्शनादि को धारण किये रहना निस्तरण है।

इन आराधनाओं का फल मुक्ति बताया गया है। यह परमागम का सार कही जाती हैं। चातुर्मास में हमें आराधना करने का सौभाग्य प्राप्त होता है क्योंकि रत्नत्रयधारी सन्तों का सान्निध्य सहज रूप में प्राप्त हो जाता है। अतः चातुर्मास अकेले

यदि तुम सदा ही गौरवमय बनना चाहते हो तो सबके प्रति क्षमामय व्यवहार करो (तिरुवल्लूर)

सन्तों का ही नहीं अपितु श्रावकों का भी है। श्रावक के आवश्यकों में दान, पूजा, शील और उपवास को रखा गया है। वर्षायोग में दान की प्रवृत्ति बढ़ती है। अतः दान सही पात्र को देना चाहिए। गुरुओं को देने के लिए औषधिदान, शास्त्रदान, अभयदान, आहारदान बताये गये हैं। आज श्रावकगण भी आहार दान को छोड़कर शेषदानों के प्रति विशेष प्रवृत्ति नहीं करते। कुछ भ्रमितजन तो साधुओं के लिए औषधिदान का भी यह कहकर विरोध करते हैं कि औषधिदान करके आप उनके परीषहजय में बाधक बन रहे हैं। उनका यह कथन शास्त्र एवं आचार के विरुद्ध है। श्रावकों का यह कर्त्तव्य बन जाता है कि वे साधुओं को रोग आदि होने पर उनका सम्यक् उपचार करें और जरूरी होने पर आहार के समय सीधे या भोजन में मिलाकर औषधि दान करें ।

शास्त्रदान की स्थिति बड़ी विचित्र हो गयी है। आयोजकगण साधु को देने के लिए शास्त्रदान की बोलियां तो लगवा लेते हैं किन्तु मन्दिरों में दूसरों के द्वारा दान दिये गये या भेंट दिये गये शास्त्रों को साधुओं को दिलवाते हैं। यह प्रवृत्ति उचित नहीं है। मन्दिरों के 'शास्त्र' दान में कैसे दिये जा सकते हैं ? हाँ, साधु उन्हें स्वाध्याय के लिए ले सकते हैं। अतः शास्त्रदान करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए कि वह शास्त्र स्वयं के द्रव्य से क्रय किया गया हो। आयोजकों को भी दानदाताओं के साथ छल नहीं करना चाहिए।

वर्तमान में तीर्थक्षेत्रों पर भक्तों के आवागमन में निरंतर वृद्धि हो रही है। यह शुभ संकेत है। लेकिन यह भी ध्यान रखें कि हम तीर्थ स्थानों को अपने कूड़ा–कचरा से मुक्त रखें। वर्षायोग में जो भी श्रावक तीर्थ स्थानों पर जाएं वे वहाँ पौधारोपण करें ताकि वहाँ का पर्यावरण संरक्षित रहे। भूमि का कटाव वृक्षों के होने से रुक जाता है। इस तरह चातुर्मास हमारे लिए बहुउपयोगी बन सकता है।

राष्ट्रीय मुद्रा पर गाय का चिन्ह हो।

परम पूज्य, संतशिरोमणि, वरिष्ठतम जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने बीनाबारहा (म.प्र.) में म.प्र. के मंत्री श्री गोपाल भार्गव से चर्चा के मध्य कहा कि अहिंसक समाज को भारतसरकार से मांग करना चाहिए कि राष्ट्रीय मुद्रा पर गाय का चिन्ह अंकित हो। ऐसा करके गौ सम्पदा की रक्षा की जा सकेगी। पूज्य आचार्य श्री का यह कथन और प्रेरणा अनुकरणीय है। यदि अहिंसक जैन/अजैन समाज इसके लिए विशेष प्रयत्न करे, अपने अपने क्षेत्र के सांसदों को इस बात के लिए तैयार करे तो यह कार्य सम्भव हो सकता है। **वर्तमान में श्री नरेन्द्रमोदी प्रधानमंत्री हैं, जो स्वयं शाकाहारी हैं तथा गौवंश के संरक्षण हेतु प्रयासरत हैं। अतः एक अच्छे, अहिंसक वातावरण में यह कार्य संभव हो सकता है। चातुर्मास में सम्पूर्ण सन्त समाज को इसके लिए प्रेरित करना चाहिए। हमें विशेष रूप से जैन समाज को उन राज्य सरकारों का, मुख्यमंत्रियों का विशेष समर्थन एवं सम्मान करना चाहिए जिन्होंने अपने राज्य में गौवंश की हत्या पर प्रतिबंध लगाया हुआ है।** हमें गीतकार नीरज की इन पंक्तियों को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए कि–

जागते रहिये, जमाने को जगाते रहिये।
मेरी आवाज में आवाज मिलाते रहिये ।।

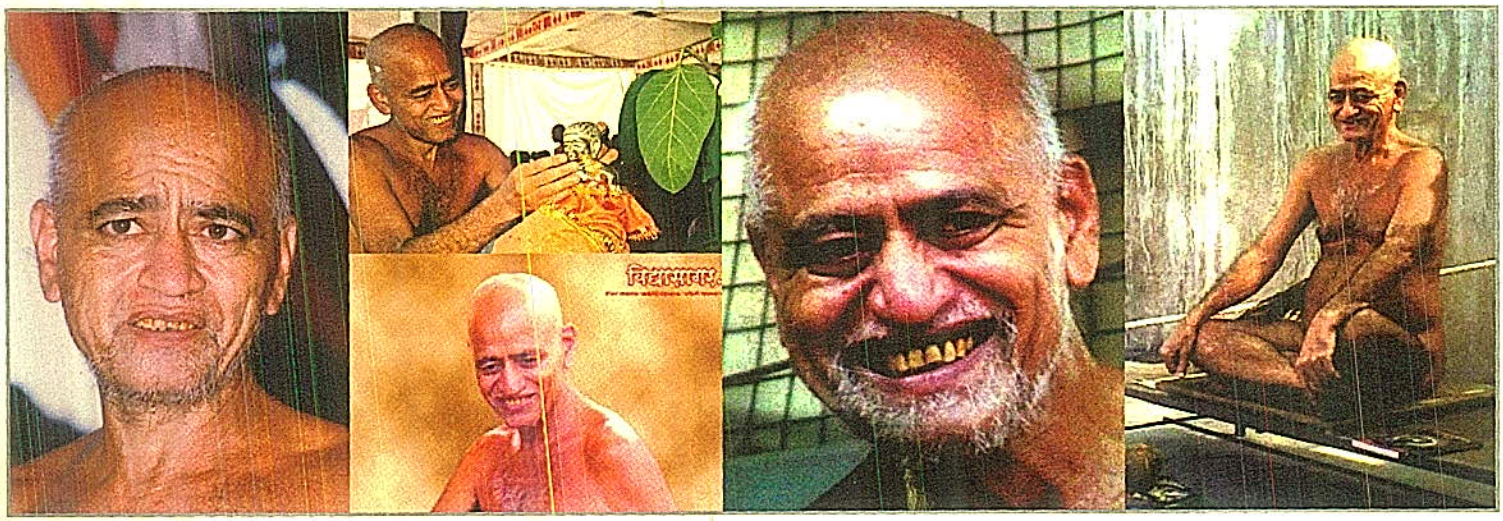

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

जैनधर्म के उन्नीसवें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ भगवान्

कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'
महामन्त्री–श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद्
एल–65, न्यू इन्दिरानगर, बुरहानपुर (म.प्र.) मो. 09826565737

मोहमल्ल को जीत लिया प्रभु, मोक्षमार्ग का साथ बना।
शल्यहरण कीं सभी तरह की, तीर्थंकर मल्लिनाथ बना।।
दे उपदेश प्राणिमात्र को, जीवदया हितकर बतलाया।
आगे बढ़ना सच–सच कहना, एक यही सन्देश बना।।

जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत से पूर्व की और कच्छकावती नामक देश में वीतशोक नामक नगर में उच्चकुलोत्पन्न वैश्रवण नामक राज्य करता था। वह प्रजा हितैषी, सन्मार्गी, भोगोपभोग में निपुण, नीतिमार्ग का अनुसरण करने वाला था। एक दिन उसने वज्र गिरने के कारण जड़मूल से नष्ट हुए वटवृक्ष को देखकर विचार किया कि संसार में वटवृक्ष से अधिक मजबूत जड़ किसकी है ? जब इसका इसतरह विनाश हो सकता है तो फिर हम जीवों का संरक्षण कैसे होगा ? इस तरह संसार से विरक्त हो उसने अपना राज्य अपने पुत्र के लिए दे दिया और श्रीनाग नामक पर्वत पर विराजमान श्रीनाग नामक मुनिराज के पास जाकर धर्मामृत का पान किया तथा अनेक राजाओं के साथ तपश्चर्या की। उसने यथायोग्य विधि से ग्यारह अंगों का अध्ययन किया। सोलहकारण भावनाओं का चिन्तवन किया। फलस्वरूप तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया। आयु कर्म समाप्त होने पर उसने अपराजित नामक अनुत्तर विमान में अहमिन्द्र–देव पद प्राप्त किया। उसकी आयु 33 सागर, शरीर एक हाथ ऊँचा था। साढ़े सोलह माह बीत जाने पर वह एक बार अल्पश्वास ग्रहण करता था। 33 हजार वर्ष व्यतीत हो जाने पर मानसिक आहार ग्रहण करता था। काम भोग–प्रवीचार से रहित था। लोक नाड़ी पर्यन्त उनके अवधिज्ञान का विषय था और उतनी ही दूर तक दीप्ति, शक्ति और विक्रिया ऋद्धि थी। इस प्रकार सम्पूर्ण भोगोपभोग करते हुए उस अहमिन्द्र की जब छह माह आयु शेष रह गयी तब वह पृथ्वी पर आने के लिए सम्मुख हुआ।

भरतक्षेत्र के वंगदेश में मिथिलानगरी में इक्ष्वाकुवंशी, काश्यप गोत्री कुंभ नामक राजा राज्य करता था। उसकी लक्ष्मी सदृश प्रजावती नामक रानी थी। उसने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन पिछली रात्रि में प्रातःकाल से पूर्व अश्विनी नक्षत्र में सोलह

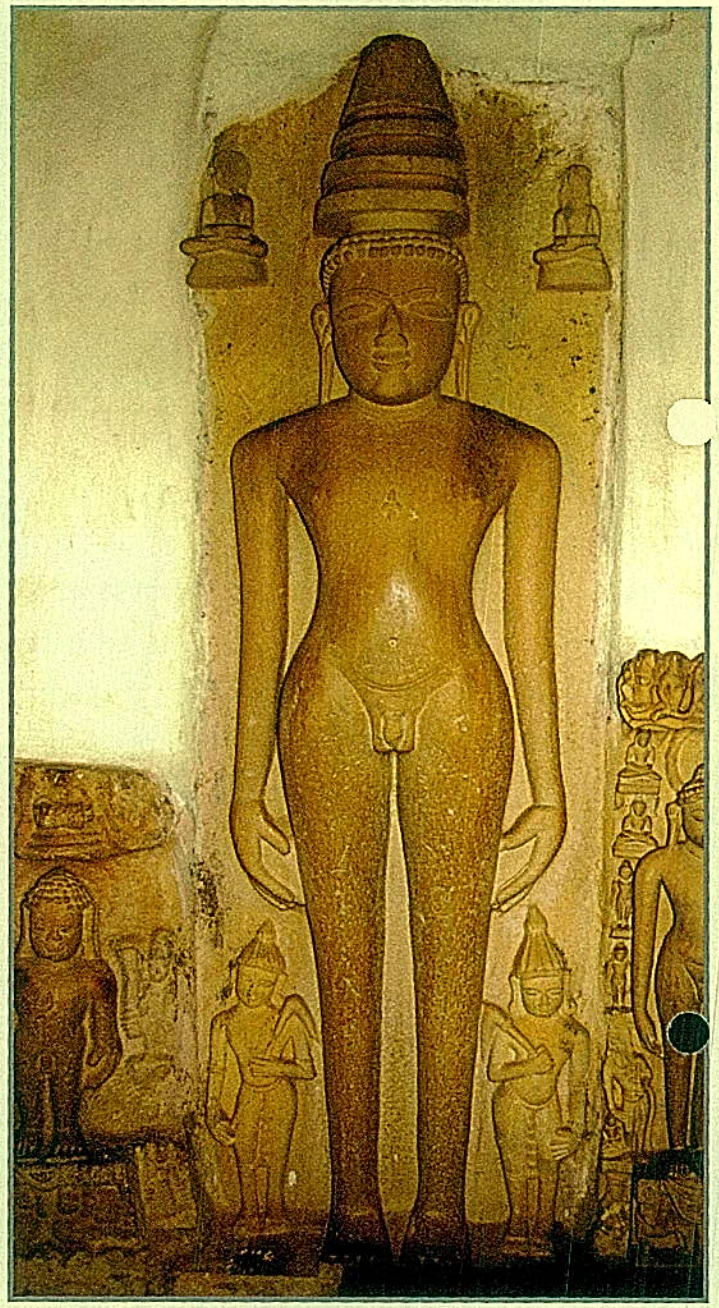

स्वप्न देखे। उस समय स्वस्तिवाचन करने वाले पाठकों ने उच्च स्वर में मंगलगान किया।

प्रातः रानी ने स्नान आदि से निवृत्त हो मंगलवेश धारण कर अपने पति के पास पहुँचकर रात्रि में देखे सोलह स्वप्न बताये। पति राजा कुंभ ने उन स्वप्नों का फल क्रम क्रम से बताया और कहा कि आपने अपने मुख में प्रवेश करता हुआ हाथी स्वप्न में देखा है जिसका फल यह है कि अहमिन्द्र का जीव आपके गर्भ

ज्ञान एक ऐसा धन है, जो मन को भी अपने वश में कर लेता है।

में आया है। वह जीव उत्पन्न होकर तीर्थंकर बनेगा। रानी ने यह सुनकर अत्यधिक प्रसन्नता व्यक्त की। इन्द्रादि ने आकर गर्भकल्याणक का उत्सव मनाया। भगवान् के माता–पिता स्वयं कल्याण से युक्त होते हैं। अतः उनके घर–आंगन में गर्भकल्याणक का उत्सव मनाया जाना प्रशंसनीय है।

नौ माह व्यतीत होने पर रानी प्रजावती ने मगशिर शुक्ल एकादशी के दिन अश्विनी नक्षत्र में पूर्ण चन्द्रमा के समान कांतिवान एक हजार आठ शुभलक्षणों से युक्त, मति–श्रुत–अवधि ज्ञान से युक्त शिशु को जन्म दिया। यह शिशु कोई और नहीं तीर्थंकर बनने वाले अहमिन्द्र का जीव ही था। अवधिज्ञान से धर्म इन्द्र ने तीर्थंकर के जन्म का वृत्त जानकर अपने देव परिकर को आदेश दिया कि वह सब उनके साथ मिथिलानगरी में राजा कुम्भ के राज भवन में चलें और तीर्थंकर भगवान् का जन्म कल्याणक महोत्सव मनायें। तदनुसार सौधर्म इन्द्र ऐरावत हाथी एवं देव परिकर के साथ मिथिलानगरी आया और सम्पूर्ण नगरवासियों को अपनी माया के द्वारा सुप्तकर शची को आदेशित किया कि वह महारानी प्रजावती के प्रसूतिगृह में जाकर तीर्थंकर शिशु को लेकर आयें। शची ने वैसा ही किया। जब सौधर्म इन्द्र ने तीर्थंकर शिशु को अपने हाथों में लिया तो देखते ही रह गया। उनका सौन्दर्य उनकी दो आँखों में समा नहीं रहा था। अतः उन्होंने एक हजार नेत्र बनाकर तीर्थंकर प्रभु के दर्शन किये फिर भी तृप्त नहीं हुआ। ऐसा अप्रतिम सौन्दर्य होता है तीर्थंकर का।

सौधर्म इन्द्र ने ऐरावत हाथी पर प्रभु को विराजमान किया और उन्हें ले जाकर सुमेरु पर्वत की पाण्डुक शिला पर विराजमान किया। तदनंतर क्षीरसागर के निर्मल, पवित्र, प्रासुक जल से भरे एक हजार आठ कलशों से उनका अभिषेक किया। जब सौधर्म इन्द्र अभिषेक की तैयारी कर रहा था तब उसके मन में शंका उत्पन्न हुई कि कहीं यह सद्यःजात शिशु इतने जल के प्रभाव को सहन कर भी पायेंगे या नहीं ? प्रभु ने उनकी शंका समझ ली और धीरे से अपने पैर के अंगूठे से पाण्डुक शिला को थोड़ा सा दबा दिया तो संपूर्ण सुमेरुपर्वत ही कांप उठा। सौधर्म इन्द्र को तुरंत अपनी भूल का एहसास हुआ कि अरे, तीर्थंकर तो अतुलित बलशाली होते हैं, उनके बल पर शंका कैसी ? उन्होंने प्रभु से क्षमायाचना की और भरपूर अभिषेक किया। अभिषेक के उपरान्त गंधोदक सिर पर धारण किया और उत्तमोत्तम वस्त्राभूषण पहनाकर उनका जयघोष के साथ श्री मल्लिनाथ नाम घोषित किया। अनन्तर उन्हें गाजे–बाजे के साथ राजभवन में लाकर माता–पिता को सौंप दिया तथा उनकी बिना आज्ञा के प्रभु को ले जाने के लिए क्षमायाचना की तथा अद्भुत नृत्य–वादित्र के साथ जन्मकल्याणक महोत्सव मनाया।

श्री अरनाथ तीर्थंकर के बाद एक हजार करोड़ वर्ष बीत जाने पर श्री मल्लिनाथ हुए थे। उनकी आयु 55 हजार वर्ष इसी में सम्मिलित थी। उनका शरीर स्वर्ण के समान कांतिवान तथा 25 धनुष ऊँचा था। उनका चिन्ह कलश माना गया है।

श्री मल्लिनाथ ने जब कुमारकाल के 100वर्ष पूरे कर लिये तब एक दिन उनके विवाह की तैयारी प्रारंभ हुई। सम्पूर्ण मिथिलानगरी को सजाया गया। सफेद पताकायें जगह–जगह फहरायी गयीं। तोरण द्वार बांधे गये। विभिन्न प्रकार के चित्रों से भित्तियों को सजाया गया। पुष्प समूह बिखेरे गये। उनकी सुरभि से वातावरण सुरभित हो उठा। वाद्य यन्त्रों की मधुर ध्वनि कर्ण कुहरों को आनंदित करने लगी। तभी कुमार श्री मल्लिनाथ को अपने पूर्व जन्म की याद आ गयी जब वे अपराजित विमान में थे। वे सोचने लगे कि कहाँ तो वीतरागता से उत्पन्न हुआ प्रेम और उससे प्रकट हुई महिमा और कहाँ सज्जनों को लज्जा उत्पन्न करने वाला यह विवाह। यह एक विडम्बना है। बुद्धिमान् इसे नहीं करते। इस प्रकार विवाह की निन्दा करते हुए वे जिनदीक्षा ग्रहण करने के लिए उद्यत हो गये। आचार्य श्री गुणभद्र ने उत्तरपुराण (पर्व 66, श्लोक–38 से 42) में इस प्रसंग का वर्णन इस प्रकार किया है–

शतसंवत्सरे याते कुमारसमये पुरम्।
चलत्सितपताकाभिः सर्वत्रोद्बद्धतोरणैः।।
विचित्ररंगवल्लीभिर्विकीर्णकुसुमोत्करैः।
निर्जिताम्भोनिधिध्वानैः प्रध्वनत्पटहादिभिः।।
मल्लिर्निजविवाहार्थं भूयो वीक्ष्य विभूषितम्।
स्मृत्वापराजितं रम्यं विमानं पूर्वजन्मनः।
सा वीतरागता प्रीतिरुर्जिता महिमा च सा।
कुतः कुतो विवाहोऽयं सतां लज्जाविधायकः।।

विडम्बनमिदं सर्वं प्रकृतं प्राकृतैर्जनैः।
निन्दयन्निति निर्विद्य सोऽभून्निष्क्रमणोद्यतः।।

इस तरह कुमार श्री मल्लिनाथ ने जिनदीक्षा ग्रहण करने का विचार किया। किन्हीं शास्त्रों में ऐसा उल्लेख मिलता है कि वे विवाह के लिए रथ पर सवार होकर जा रहे थे तभी उन्हें आकाश मार्ग से जाते हुए इन्द्र परिकर दिखा जिससे उन्हें अपनी पूर्व इन्द्र पर्याय का स्मरण हो आया। उन्हें लगा कि जब सागरों पर्यन्त भोग भोगने पर भी तृप्ति नहीं मिली तो अब एक विवाह और करने से क्या तृप्ति मिलेगी ? वास्तव में तृप्ति भोग से नहीं योग से ही मिलती है, और उन्होंने रथ को वापिस मोड़ा और वन की ओर प्रयाण किया। किसी शास्त्र में उनके वैराग्य का कारण तड़िद अर्थात् बिजली का गिरना या तड़कना भी माना गया है। जिससे उन्हें संसार की क्षणभंगुरता का एहसास हुआ। इस तरह श्री मल्लिनाथ ने विवाह न करके आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया। उनकी गणना पंचबालयति तीर्थंकरों में होती है।

श्री मल्लिनाथ के वैराग्य का विचार जानकर लौकांतिक देवों ने आकर उनके विचार का अनुमोदन किया। तदनंतर देवों ने आकर उनका दीक्षाभिषेक किया और जयन्त नामक पालकी पर आरुढ़ कर श्वेत वन (मिथिला का शालिवन)के उद्यान में उन्हें ले गये। वहाँ उन्होंने बेला के उपवास (षष्ठभक्त) का नियम लेकर अगहन शुक्ल एकादशी के दिन अश्विनी नक्षत्र में सायंकाल सिद्ध भगवान् को नमस्कार कर सम्पूर्ण बाह्य–आभ्यन्तर परिग्रह का त्याग कर पंचमुष्टि केशलोंच कर 300 (अन्यत्र 1000) राजाओं के साथ जिनदीक्षा ग्रहण कर ली। जिनदीक्षा ग्रहण करते ही उन्हें मनःपर्यय ज्ञान उत्पन्न हुआ।

मुनि श्री मल्लिनाथ ने सम्यक्ज्ञान से प्रेरित हो तीर्थंकरों की शाश्वत परम्परा के अनुरूप आहार करने हेतु मिथिलापुरी में प्रवेश किया वहाँ स्वर्ण के समान कांतिवान नंदिषेण नामक राजा के यहाँ प्रासुक आहार ग्रहण किया। उस समय देवों ने पंचाश्चर्य किये। तदनंतर मुनि श्री मल्लिनाथ वापिस आकर ध्यानस्थ हो गये।

छद्मस्थकाल के छह दिन व्यतीत हो जाने पर शालिवन में अशोकवृक्ष के नीचे उन्हें फाल्गुन कृष्ण द्वादशी के दिन अपराह्न में (अन्य शास्त्रानुसार प्रातःकाल) चार घातिया कर्मों का नाश होने पर केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। केवलज्ञान होने पर देवों ने आकर उनके सर्वज्ञत्व पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनकी पूजा की और केवलज्ञान कल्याणक महोत्सव मनाया। तीर्थंकरों की परम्परा में सबसे कम समय–मात्र छह दिन में उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी। इससे उनके परिणामों की विशुद्धि एवं आत्मा में एकाग्रता का ज्ञान होता है।

तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ को केवलज्ञान उत्पन्न होने पर सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने अप्रतिम सुन्दर बारह कोष्ठ युक्त समवशरण की रचना की। तीन योजन विस्तृत इस समवशरण के मध्य में अन्तरिक्ष रूप में तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ विराजमान हुए। देवातिशय से उनके मुख चारों दिशाओं दिखाई देते थे। उनके समवशरण में विशाख (उत्तर पुराण के अनुसार–कुम्भार्य) को आदि लेकर उनके अट्ठाईस गणधर थे, पाँच सौ पचास पूर्वधारी थे, उनतीस हजार शिक्षक थे, दो हजार दो सौ पूज्य अवधिज्ञानी थे, इतने ही केवलज्ञानी थे, एक हजार चार सौ वादी थे, दो हजार नौ सौ विक्रिया ऋद्धि से विभूषित थे और एक हजार सात सौ पचास मनःपर्ययज्ञानी थे। इस प्रकार सब मिलाकर चालीस हजार मुनिराज उनके साथ थे। मधुसेना (बन्धुषेणा) को आदि लेकर पचपन हजार आर्यिकाएं थीं, श्रावक एक लाख थे और श्राविकाएं तीन लाख थीं, देव–देवियां असंख्यात थीं और सिंह आदि तिर्यंच संख्यात थे। मल्लिनाथ भगवान् बारह सभाओं से सदा सुशोभित रहते थे।

तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ का हम सबके लिए सन्देश है कि मोह रूपी महाशत्रु को जीतो। संसार मार्ग (विवाह) में सुख नहीं, सुख तो ब्रह्मचर्य पूर्वक आत्मसाधना में है। जन्म–जरा और मरण के चक्र से बाहर निकलने पर तप, त्याग और योग साधना से मोक्ष की प्राप्ति होती है। आचार्य श्री गुणभद्र ने उत्तरपुराण (पर्व 66,श्लोक–65) में लिखा है कि–

येन शिष्टमुरुवर्त्म विमुक्तेर्य, नमन्ति नमिताखिललोकाः।
यो गुणैः स्वयमधारि समग्रैः, स श्रियं दिशतु मल्लिरशल्यः।।

अर्थात् जिन्होंने मोक्ष का श्रेष्ठ मार्ग बतलाया था, जिन्हें समस्त लोग नमस्कार करते थे, और जो समग्रगुणों से परिपूर्ण थे; वे शल्य रहित मल्लिनाथ भगवान् तुम सबके लिए मोक्ष लक्ष्मी प्रदान करें।

न्यायनिष्ठ की सम्पत्ति कभी कम नहीं होती। वह दूर तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है (तिरुवल्लूर)

धर्माराधना के लिए सुअवसर : चातुर्मास

विद्यारत्न डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन, सनावद
(प्रचार मंत्री–अ.भा.दि. जैन शास्त्रिपरिषद्),
मो. 9926055754

भारतीय संस्कृति में जैन मुनियों का आचार और विचार सर्वश्रेष्ठ है। मोक्ष की इच्छा रखने वाले महामानव संसार, शरीर और भोगों से विरक्त होकर मुनि दीक्षा लेकर आत्मध्यान में लीन रहकर अपनी आत्मा के कल्याण के लिए तत्पर रहते हैं। ध्यान और अध्ययन में लीन रहकर वे मात्र आत्मचिंतन करते रहते हैं। नग्न दिगम्बर वेष धारण कर ज्ञान, ध्यान और तप साधना में अनुरक्त रहने के कारण उन्हें तपस्वी कहा जाता है। ये मुनिगण सम्यग्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र को धारणकर धर्म–सम्मत श्रेष्ठ आचरण में तत्पर रहते हैं तो परोपकार की भावना से संसार के भूले–भटके अज्ञानांधकार में डूबे लोगों को सन्मार्ग पर लगाने हेतु धर्मोपदेश देते हैं। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य रूप पाँच महाव्रतों का उपदेश देकर गृहस्थों को धर्म मार्ग पर लगाते हैं। सच्चा श्रमण ऐसे पूज्य मुनिराजों को ही कहा जाता है। ये साधु निरन्तर पैदल विहार कर धर्म का उपदेश देते हैं और स्वयं धर्म कार्यों में लगकर आत्मकल्याण हेतु तत्पर रहते हैं। इनका विहार 8 माह तक सतत् चलता रहता है। एक छोटे स्थान पर एक दिन तथा बड़े स्थानों पर अधिक से अधिक 7 दिन तक रुककर साधु को अन्यत्र विहार कर जाना चाहिए ताकि एक स्थान विशेष के प्रति आसक्ति न रहे लेकिन वर्षाऋतु में मुनियों और साधुओं को जीवहिंसा से बचने के लिए चार माह तक एक ही स्थान पर रहकर धर्म ध्यान करना होता है जिसे वर्षायोग या चातुर्मास स्थापन कहते हैं।

आगमिक परम्परा के अनुसार आषाढ़माह की कृष्ण चतुर्दशी से कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी तक चातुर्मास स्थापना का विधान है। साधु अहिंसा को पूरी तरह से पालन करने के लिए चातुर्मास स्थापना करते हैं। तीर्थंकर और गणधरादि को चातुर्मास नहीं करना पड़ता था क्योंकि उनके पास विशेष ऋद्धियाँ होती थीं जिसके कारण जीवों की हिंसा नहीं होती परंतु पंचमकाल में मुनिगणों के लिए एवं गृहत्यागी साधुओं के लिए चातुर्मास स्थापना का नियम है; जिसका साधुगण पालन करते हैं।

चतुर्थकाल में भी साधुगण चातुर्मास करते थे। मुनिगण पर्वत की कंदराओं, गुफाओं में, पर्वत के ऊपर वर्षायोग करते थे परन्तु आर्यिकायें गाँव व नगरों के निकट चातुर्मास स्थापना करती थीं। वर्तमान युग की परिस्थितियों में यह संभव नहीं है इसलिए साधुगण नगरों, कस्बों और ग्रामों में वर्षायोग स्थापना करते हैं।

अनगार धर्मामृत में पं. आशाधर जी ने लिखा है कि–

ततश्चतुर्दशी पूर्वरात्रे सिद्धामुनिस्तुती।
चतुर्दिक्षु परीत्याल्पाश्चैत्य भवतीर्गुरुस्तुतिम्।
शांति भक्ति च कुर्वाणैर्वर्षायोगस्तु गृह्यताम्।
ऊर्जकृष्ण–चतुर्दश्यां पश्चाद्रात्रौ च मुच्यताम्।।

अर्थात् भक्त प्रत्याख्यान ग्रहण करने के पश्चात् आषाढ़शुक्ल चतुर्दशी को रात्रि के प्रथम पहर में पूर्व आदि चारों दिशाओं में प्रदक्षिणा क्रम से लघु चैत्यभक्ति चार बार पढ़कर सिद्धभक्ति, योगिभक्ति, पंचगुरु भक्ति और शांति भक्ति करते हुए आचार्य आदि साधुओं को वर्षायोग धारण करना चाहिए और कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि के पिछले पहर में इसी विधि से वर्षायोग छोड़ना चाहिए।

वर्षायोग स्थापना का कारण यह है कि वर्षाकाल में स्थावर और जंगम सभी तरह के जीवों से यह पृथ्वी व्याप्त रहती है, उस समय भ्रमण करने से जीवहिंसा हो सकती है। बहुत तरह के जीव जंतु तथा वनस्पति पृथ्वी पर उत्पन्न हो जाती हैं, पानी कई जगह इकट्ठा हो जाता है, मार्ग अवरुद्ध हो जाता है जिससे विहार में कठिनाई होती है, इसलिए आचार्य तथा मुनि, आर्यिकायें, ऐलक, क्षुल्लक आदि एक ही स्थान पर रहकर धर्म साधना करते हैं।

साधु साधना करें और श्रावक उनके प्रवचनों को सुनकर धर्म मार्ग पर आगे बढ़ें तो समाज का हित होता ही है। व्यक्ति धर्म के जितने निकट रहेगा, अहिंसादि के मार्ग पर चलने का उतना ही मन बनेगा। वर्षायोग के चार महिनों में व्यक्ति व्यापारादि में उतना व्यस्त नहीं रहता इसलिए चार माह सभी धर्म के मर्म को समझ सकते हैं और मुक्ति पथ पर आगे बढ़ने के लिए कार्य कर सकते हैं। संयमितजीवन चर्चा को समझकर अनशनादि व्रत पालन की आत्मशक्ति को बढ़ा सकते हैं। इसलिए चातुर्मास सभी को उपयोगी साबित होते हैं। अतः चातुर्मास में श्रावक और मुनि दोनों को धर्माराधना करना चाहिए। श्रावकों को मुनिगणों से धर्म का रहस्य समझना चाहिए। इनकी साधना का अनुकरण कर चातुर्मास को सफल बनाना चाहिए। अमंगल में मंगल हो किन्तु मंगल में अमंगल न हो; यह ध्यान सभी पक्षों को रखना चाहिए।

विश्व - विभूति विद्यासागर

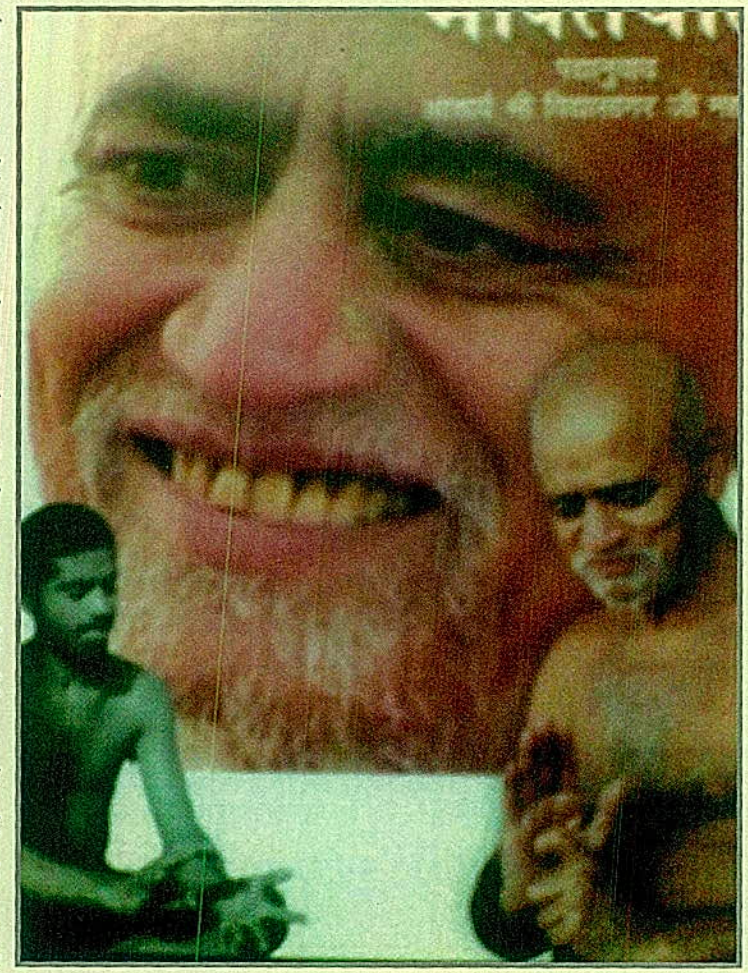

दुनिया में भारत का आध्यात्मिक जीवन सर्वोपरि है। जहां राम, कृष्ण, महावीर, गौतम, सम्राट अशोक, आदि शंकराचार्य, गुरु नानक देव, कबीर और महात्मा गांधी जैसे अनेक महामना हुए हैं जिनका व्यवहार प्राणी मात्र के प्रति, दया और करुणा का रहा है। इसी क्रम में ज्योतिर्गमय, निर्ग्रन्थ, आत्मतत्व के साधक विद्यासागर हमारी राष्ट्र धरा पर विद्यमान हैं। आपके प्रति अटूट श्रद्धा-भक्ति के वशीभूत होकर सभी क्षेत्रों के महानुभाव दर्शनार्थ एवं मार्गदर्शन के लिये पधारे हैं। उनमें माननीय अटल बिहारी वाजपेयी, भैरोसिंह शेखावत, शंकराचार्य दयानन्द सरस्वती, रूप.सी.सुदर्शन, संगीतकार रवीन्द्र जैन, से.बी.प्रमुख डी.आर.मेहता, वीरेन्द्र हेगड़े, मोहन भागवत, माधवराव सिंधिया, सुमित्रा महाजन, दैनिक भास्कर के रमेश अग्रवाल, बाबा रामदेव, अशोक सिंघल, कमलनाथ, उमा भारती, शिवराजसिंह चौहान एवं रमनसिंह आदि हैं। एक ओर आप आत्मान्वेषी हैं तो दूसरी ओर दार्शनिक, मौलिक चिंतक और समाज उद्धारक भी हैं।

भारतीय संस्कृति के पोषक विद्यासागर कुछ वर्षों से सरकार द्वारा अपनाई जा रही जीवित पशुओं का वध कर के विदेशी मुद्रा कमाने के लिए सब्सिडी देकर मांस, चमड़ा और इनके अन्य उत्पादों का निर्यात करने की हिंसक व्यापार की नीति से व्यथित हैं। ऐसा व्यापार भारत के इतिहास में कभी नहीं हुआ? यह संस्कृति, पर्यावरण एवं संविधान की मूल भावना के भी विपरीत है। आपका मानना है पशुधन ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था का आधार है। प्रकृति में वन, पशु, जल, भूमि, पहाड़ तथा जीव-जगत का अनुपात स्वतः संतुलित रहता है। वर्तमान में यह संतुलन तेजी से बिगड़ रहा है। गो-वंश के पालन से राष्ट्र आत्म-निर्भर, स्वस्थ और अहिंसक हो जायेगा। दया, करुणा, प्रेम का वात्सल्य बढ़ जायेगा। राम का सतयुग और कृष्ण के नन्दनवन की कल्पना समाहित हो जायेगी। आपका उद्घोष है - 'पशु धन बचाओ', 'मांस निर्यात बंद करो' 'गाय को राष्ट्रीय प्राणी घोषित करो'।

हमारा राष्ट्र कभी सोने की चिड़िया रहा है। तक्षशिला, नालन्द, विक्रमशिला, वालभी, सौमपुरा, ओडान्दपुरी आदि ज्ञान-विज्ञान के प्राचीन केन्द्र रहे हैं। इनमें विदेशों से अध्ययन के लिये विद्यार्थी आते थे। अंग्रेजी शासन के आने के बाद कच्चा माल ले जाया गया और उसका उत्पादन करके हमारे यहां लाकर लूटने, शोषण और गुलाम बनाए रखने की नीति अपनाई गयी। उनका खान-पान, रहन-सहन, पहनावा, अंग्रेजी भाषा और शिक्षा-प्रणाली थोप दी गयी। अपने इतिहास, अध्यात्म, नक्षत्र-ज्ञान, योग, दर्शन, गणित, रसायन, चिकित्सा की धरोहर से वंचित कर दिया गया। विद्यासागर पुनः प्राचीन गौरव के आधार पर राष्ट्र का स्वरूप बदलना चाहते हैं। वर्तमान में देश में माह, पक्ष, तिथि, संवत के स्थान पर जनवरी, फरवरी, सन् और तारीखें प्रचलन में हैं। प्रतिपदा तथा चतुर्दशी से युवा पीढ़ी अनभिज्ञ है। पाश्चात्य की भौतिक दौड़ में हम अपनी जड़ को भूल चुके हैं।

मध्यप्रदेश के सागर के आस-पास लगभग दो सौ किलोमीटर तक के क्षेत्र में चिकित्सा सुविधा के अभाव को करने के लिये आपके आशीर्वाद से दो सौ इक्कीस बिस्तर का सर्व सुविधा सम्पन्न 'भाग्योदय तीर्थ हॉस्पिटल', बी.फार्मा, पैरामेडिकल एवं नर्सिंग कॉलेज बिना व्यावसायिकता के संचालित हैं।

शिक्षा भारतीय भाषाओं के माध्यम से दी जाय। जो चाहे वह दुनिया की विभिन्न भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करे। उस ज्ञान से देश को लाभान्वित करें। अंग्रेजी भाषा की पढ़ाई ऐच्छिक हो, अनिवार्य नहीं। दुनिया की सभी भाषाओं के ज्ञान के लिये हमारी भाषाओं की खिड़कियाँ खुली रहे। संविधान सम्मत प्रथम अधिकारिक राजभाषा हिन्दी एवं प्रादेशिक भाषाओं को समुचित सम्मान प्रशासन, शिक्षा एवं न्याय के क्षेत्र में मिले। इसके लिये आपका उद्घोष है- 'अपना देश-अपनी भाषा', 'इंडिया हटाओ-भारत लाओ'।

'जीवन का निर्वाह नहीं निर्माण' आपके इस सूत्र को लक्ष्य कर के आपके आशीर्वाद से 'प्रतिभा-स्थली' ज्ञानोदय पीठ नाम से जबलपुर (मध्यप्रदेश), चन्द्रगिरि (छत्तीसगढ़), रामटेक (नागपुर-महाराष्ट्र) में लगभग एक

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के दीक्षा पूर्व की झलकियाँ

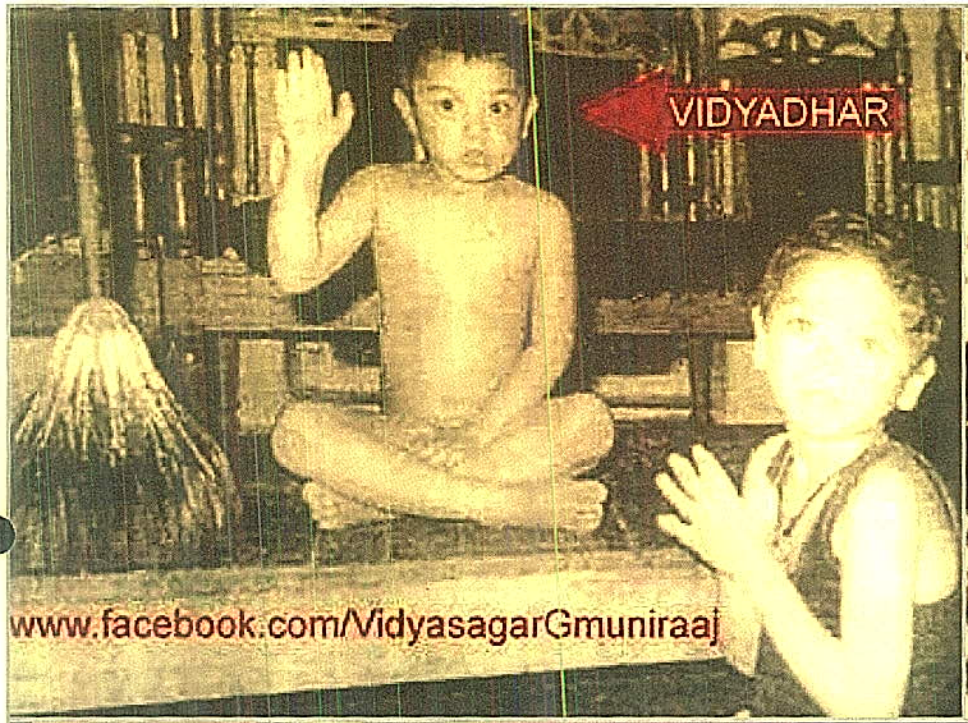

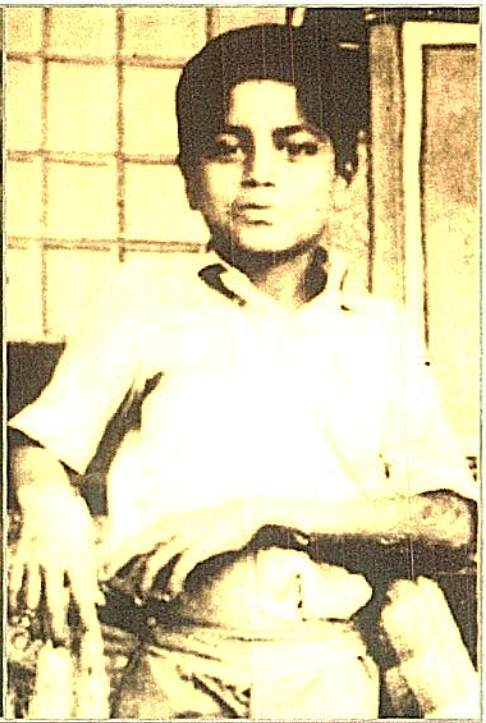

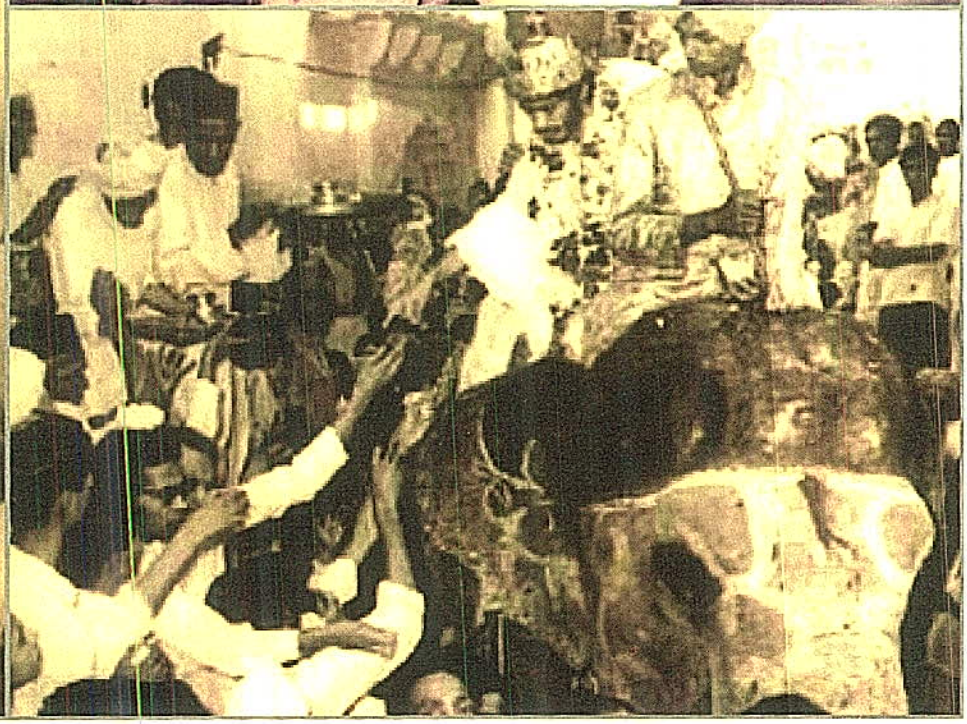

देवालय में विराजित जिनदेव तीर्थ हैं - यह व्यवहार का कथन है (योगसार, दो. 4)

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के दीक्षा की झलकियाँ

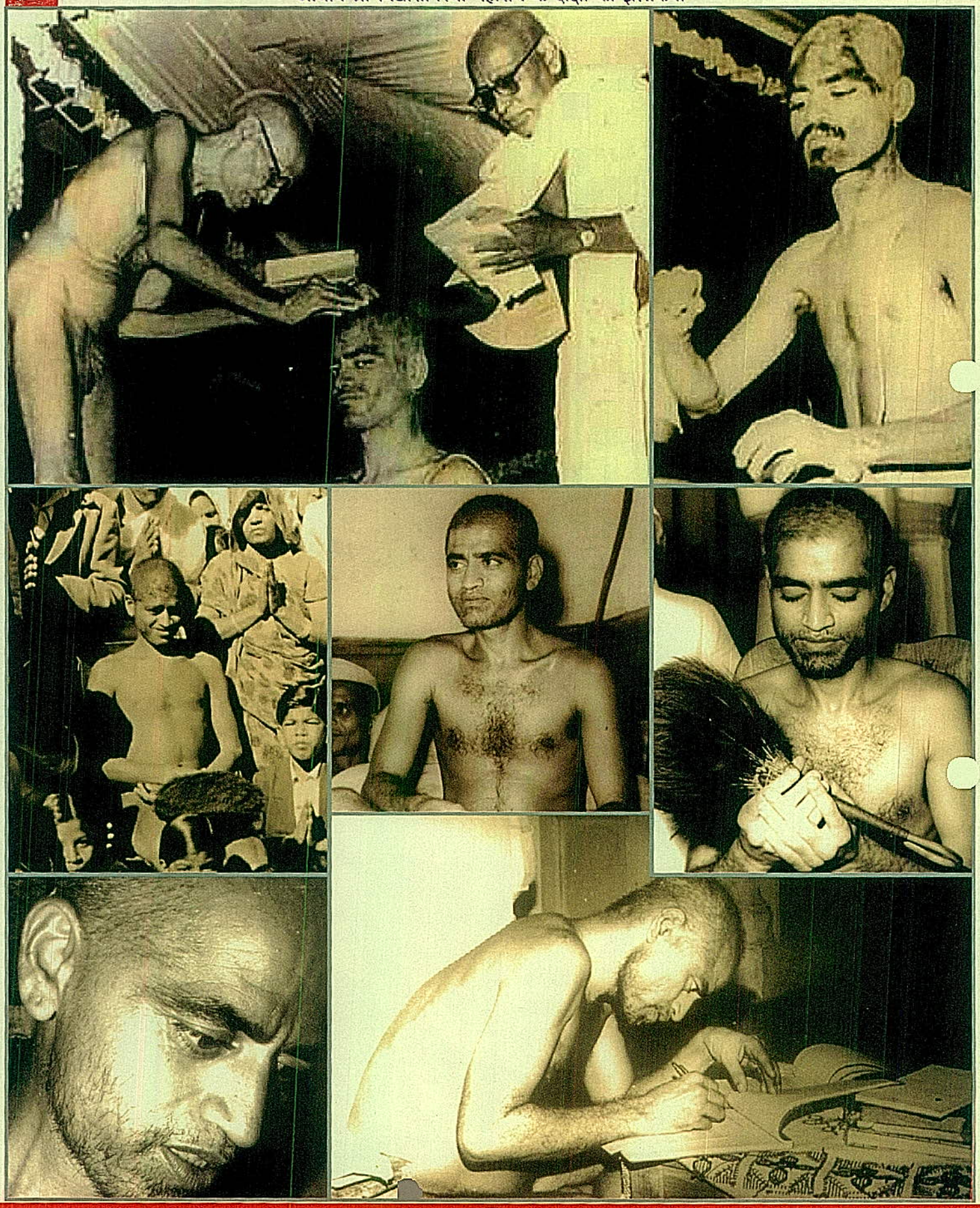

दान, पूजा, तीर्थाटन आदि यदि सम्यग्ज्ञान से सुशोभित है तो वे मुक्ति के कारण हैं (उत्तर पुराण)

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के मुनि अवस्था की झलकियाँ

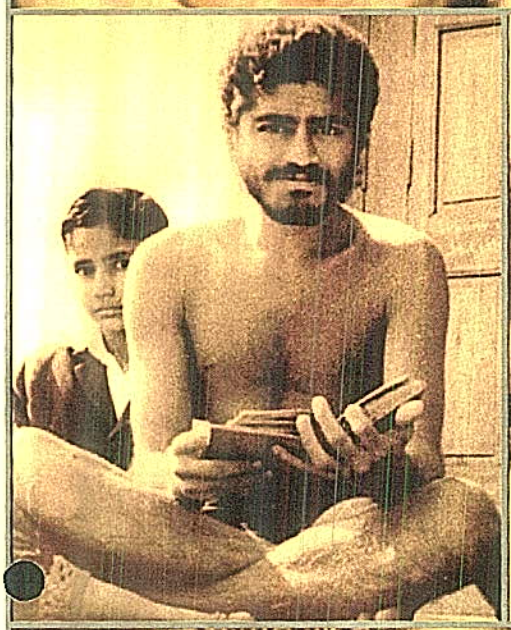

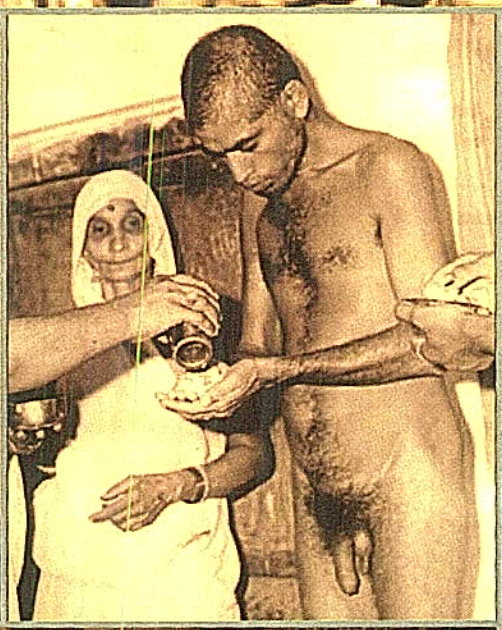

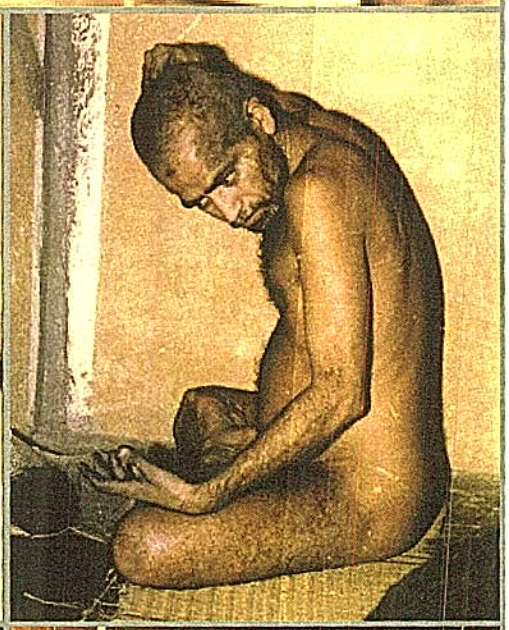

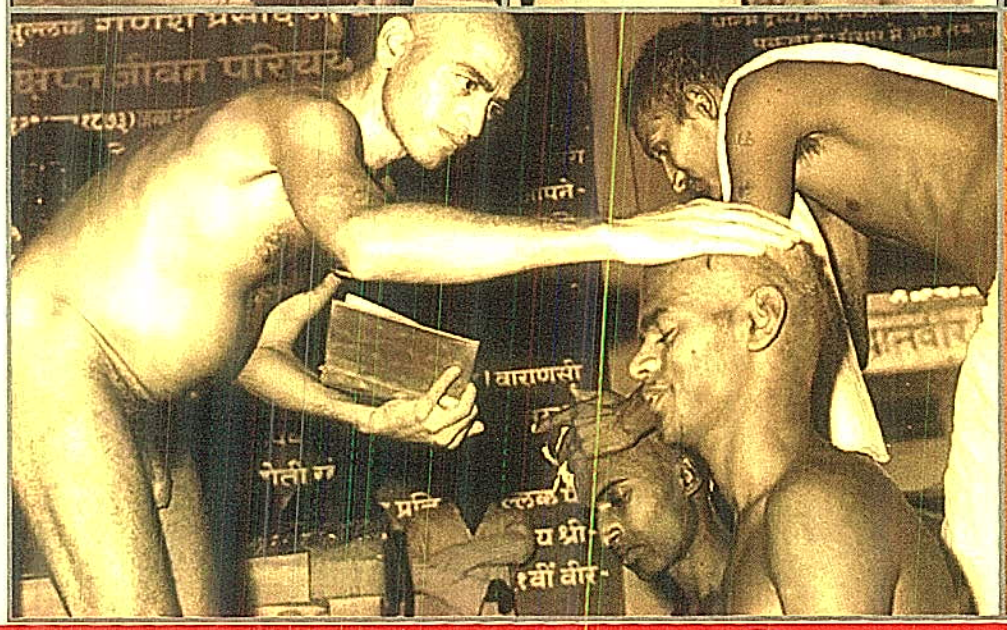

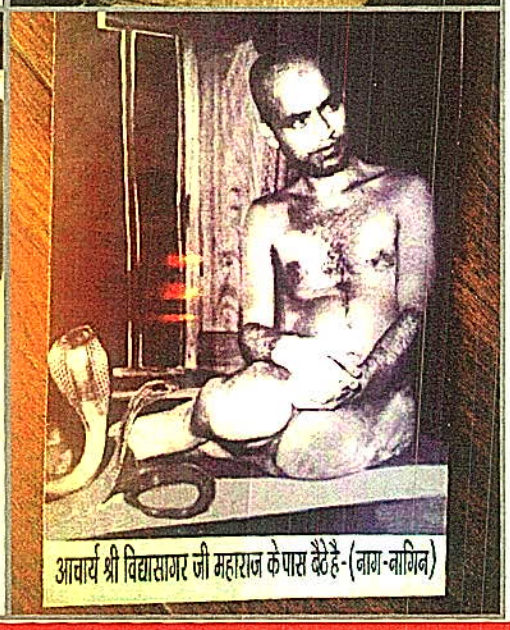

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के पास बैठे हैं-(नाग-नागिन)

दर्शन ज्ञान और चारित्रवान सभी जिनेश्वर भावतीर्थ हैं (मूलाचार, गा. 562)

मुनि विद्यासागरजी महाराज अपने पूज्य गुरुदेव आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज के साथ

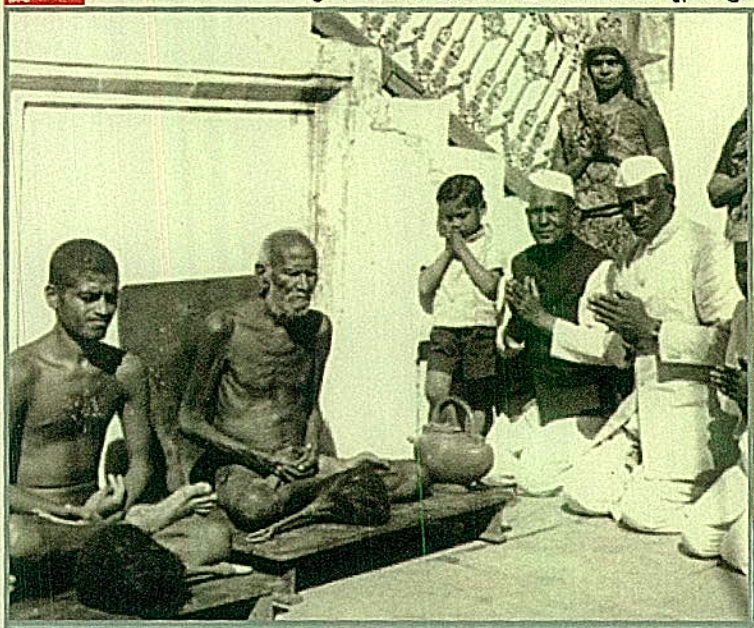

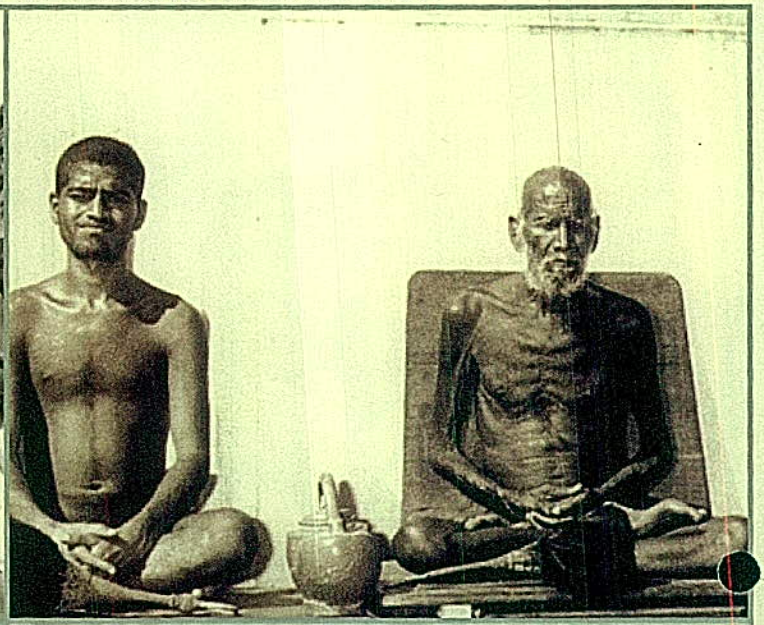

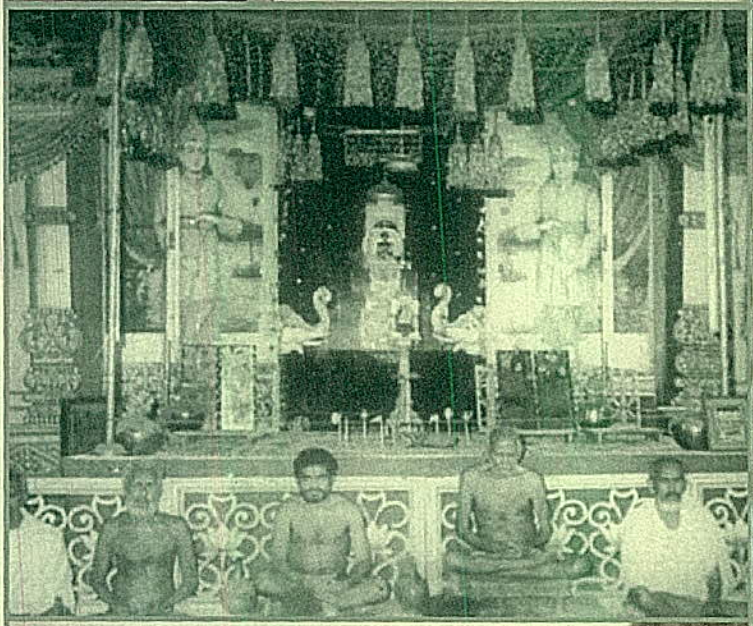

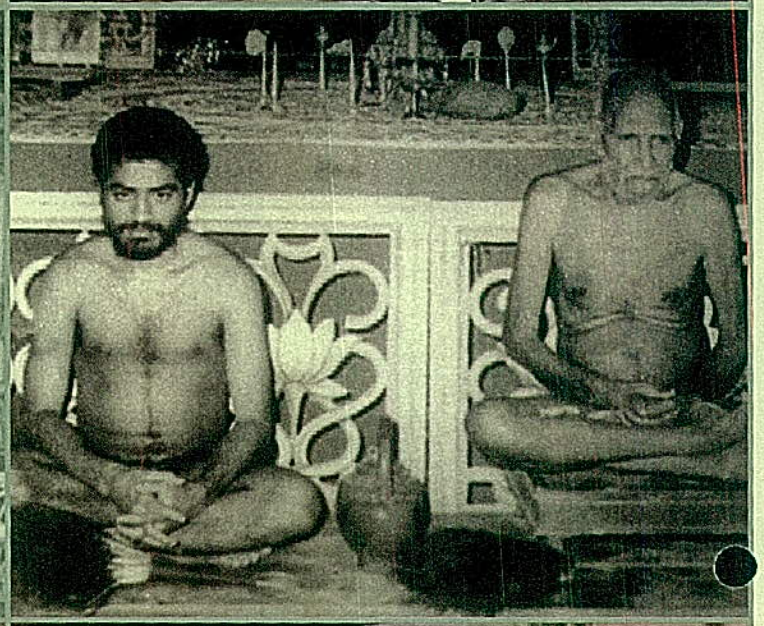

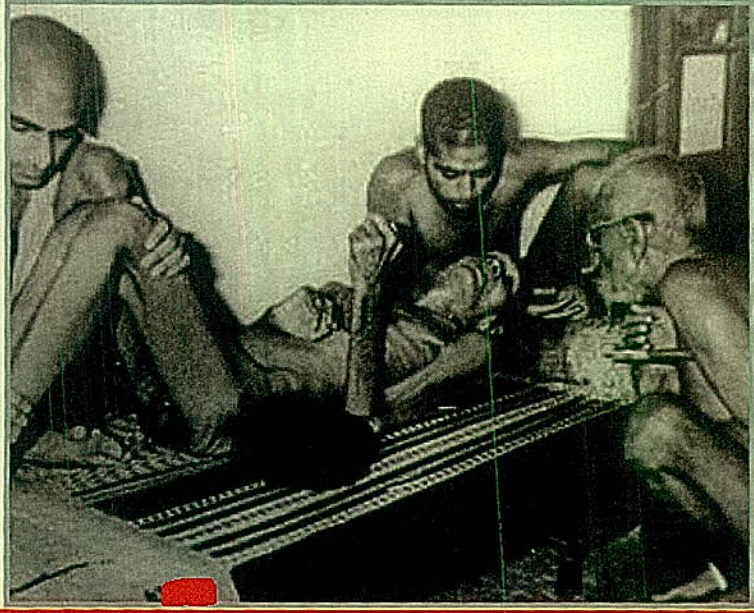

असंतोषी से बड़ा कोई गरीब नहीं, संतोषी से बढ़कर कोई धनवान नहीं।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज विभिन्न मुद्राओं में

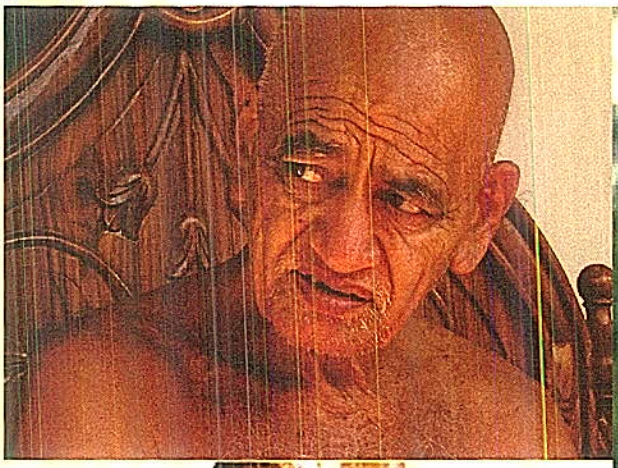

अपने गुरु की सेवा में लीन

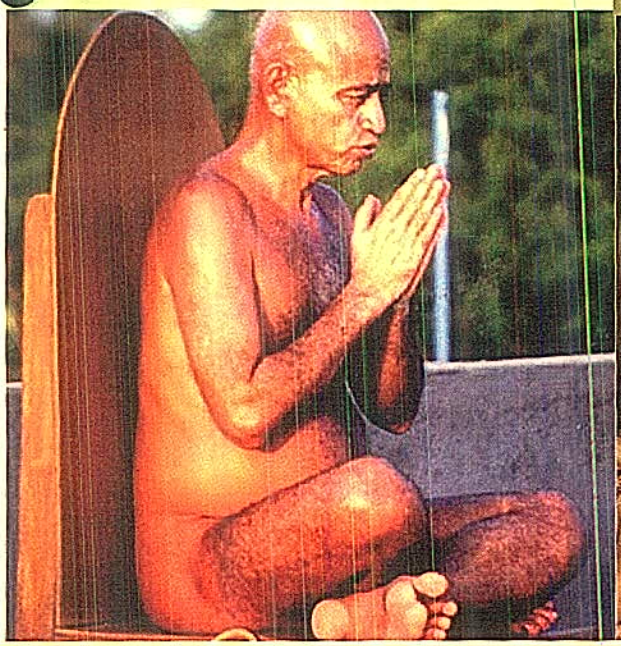

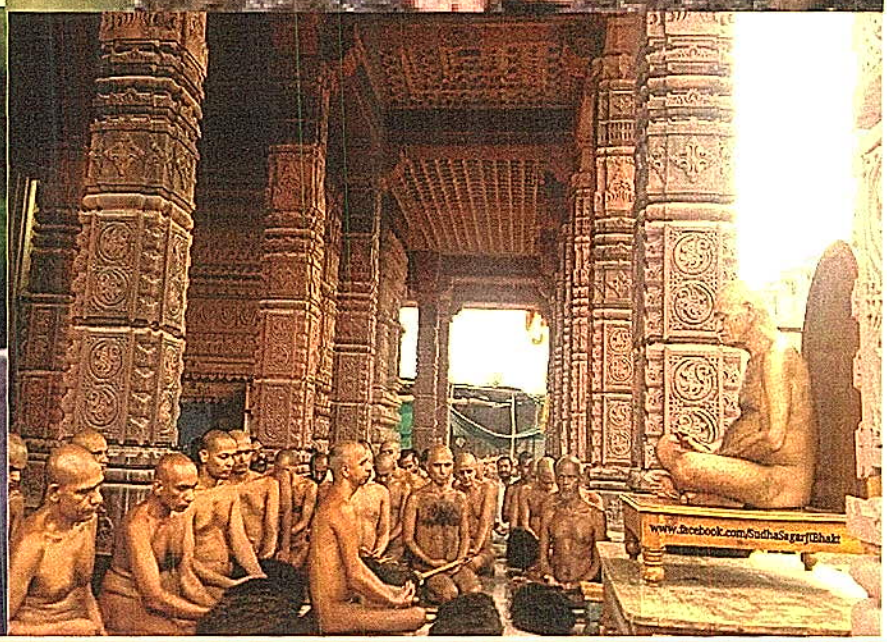

मंगलमय पाँचों कल्याणक, मंगल जिनशासन उद्देश मंगलमय निर्वाणभूमि, मंगलमय अतिशय क्षेत्र विशेष ।। (पं. राजमल पवैया)

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज विभिन्न मुद्राओं में

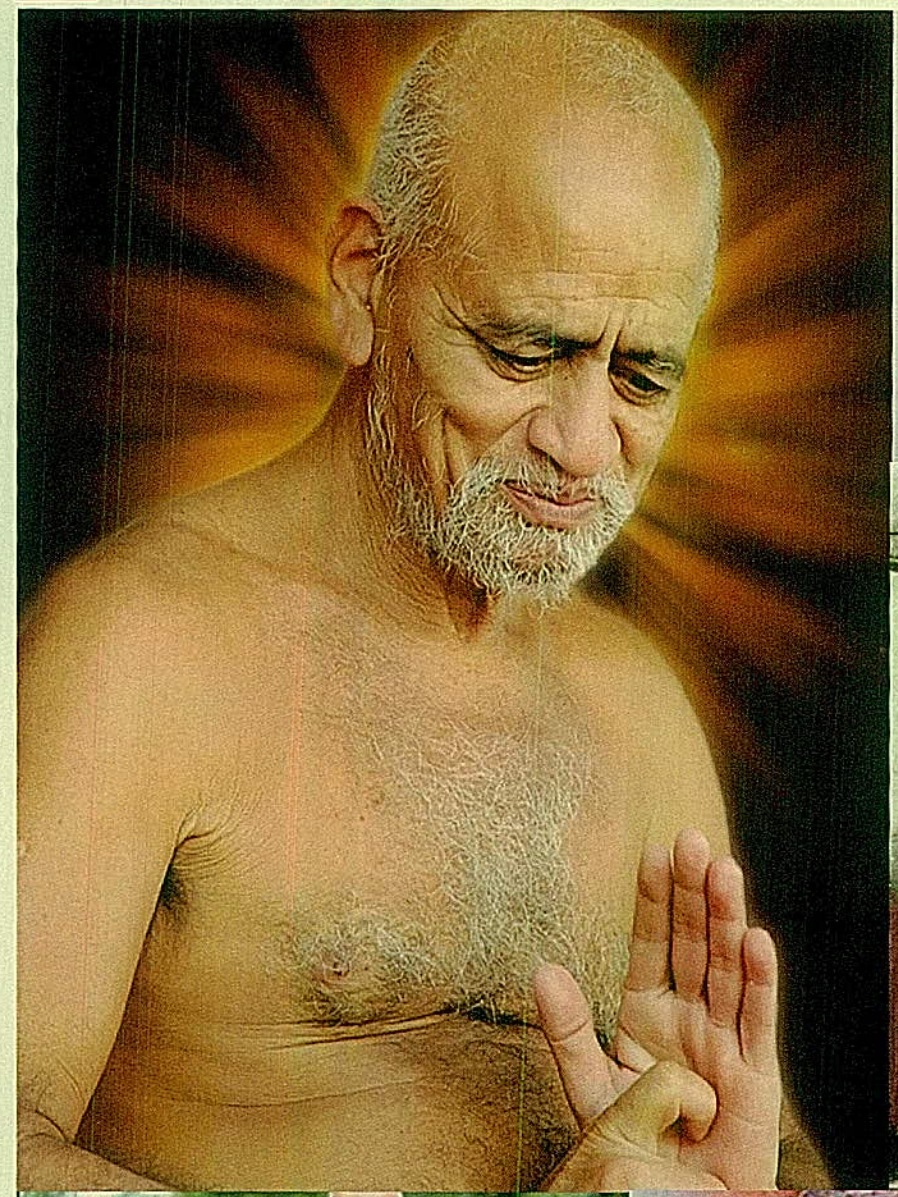

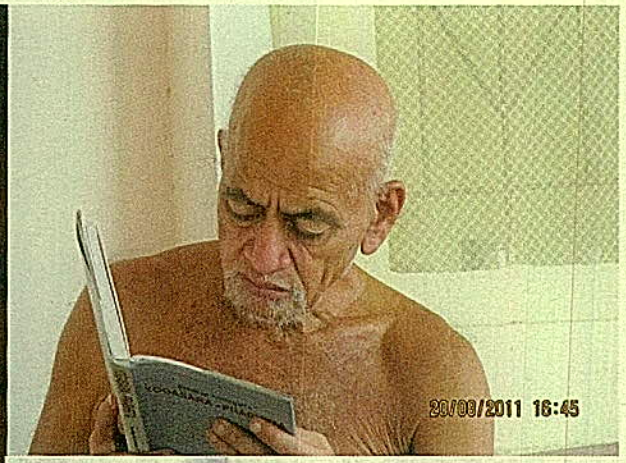

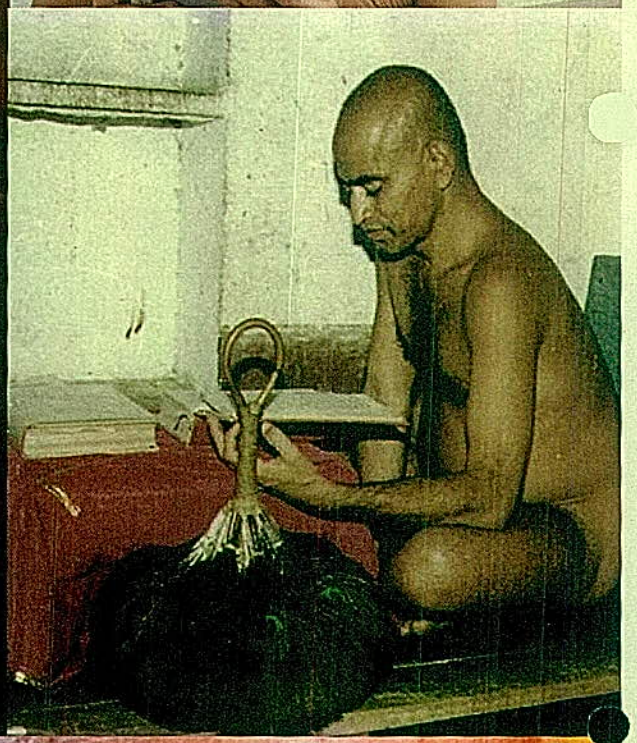

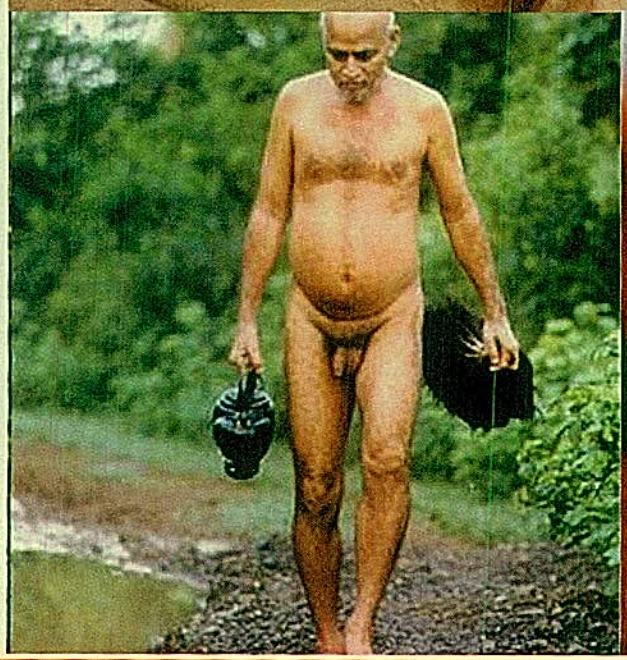

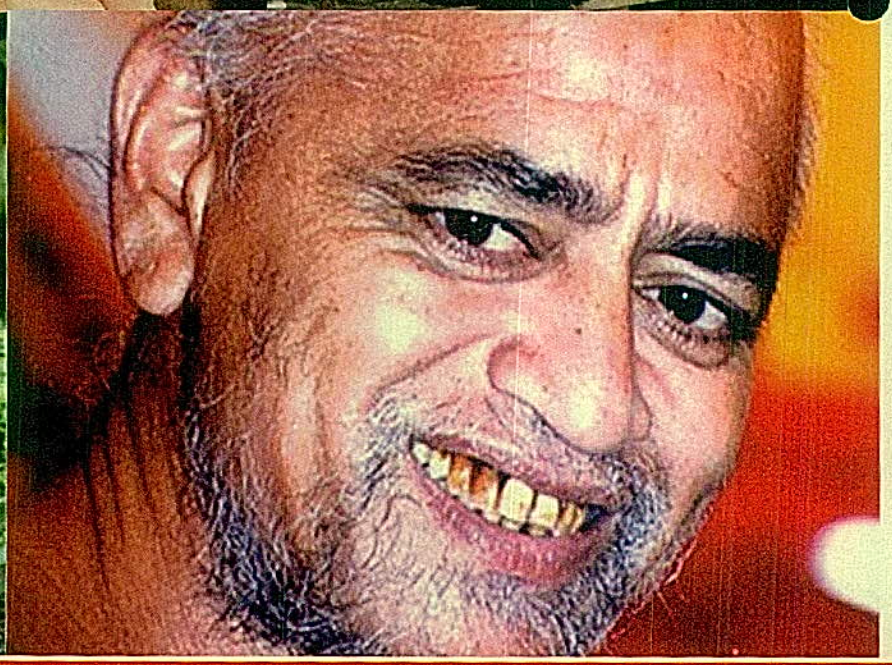

धर्म किसी दुकान पर नहीं मिलता जो पैसे से खरीदा जाये।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज विभिन्न मुद्राओं में

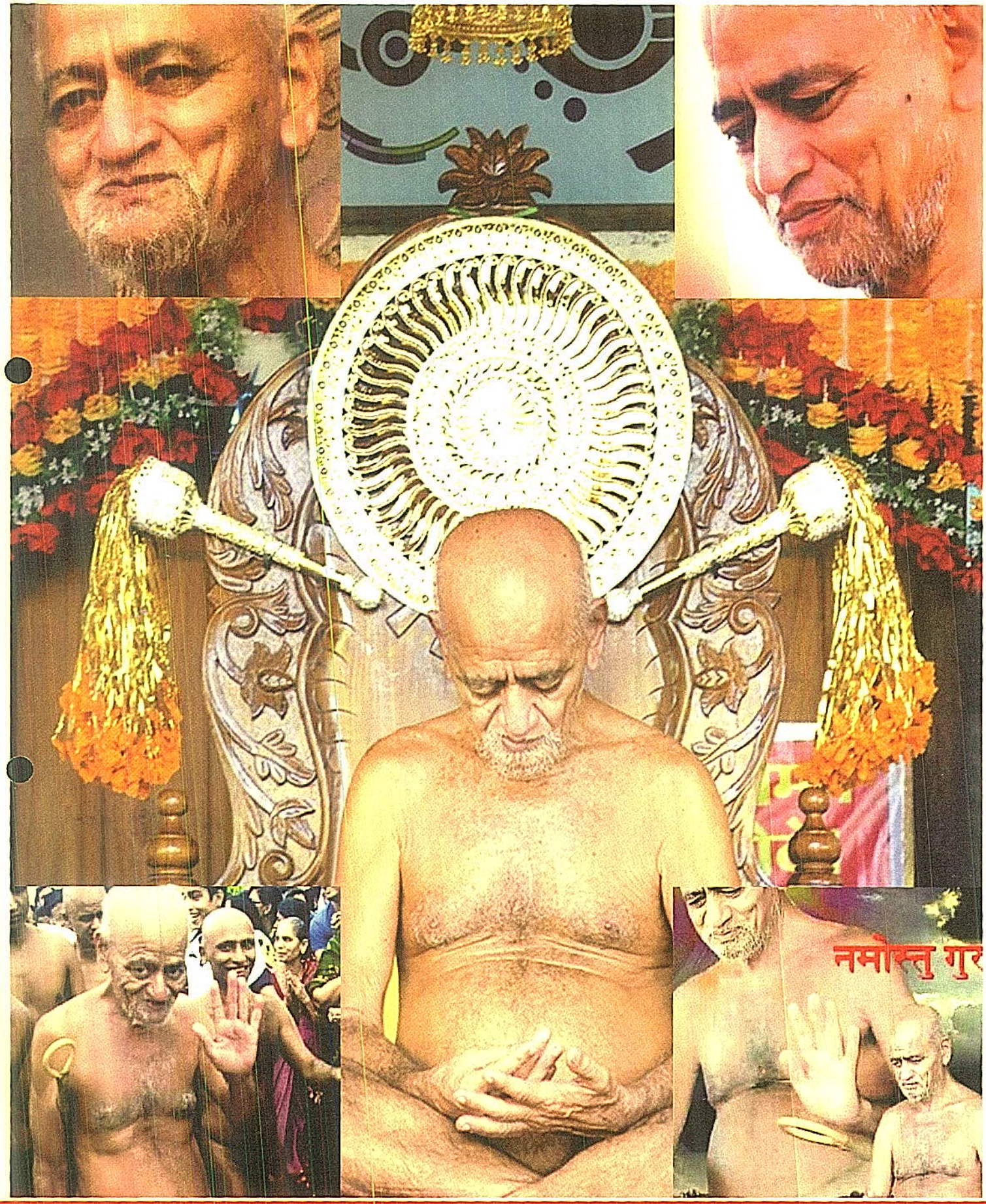

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

हजारों लड़कियां शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। आदर्श जीवन मूल्यों के उच्चतम मानकों की पूर्ति के लिये गुरुकुल पद्धति पर आधारित शिक्षण के दायित्वों को विदुषी ब्रह्मचारिणी बहिनें निष्काम भाव से पूर्ण कर रही हैं। सर्व कल्याण की आपकी भावना से सन् 1992 से 'श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन प्रशासकीय प्रशिक्षण संस्थान' जबलपुर में संचालित हैं। यहां से निकले चार सौ युवा मध्यप्रदेश सरकार में सेवारत हैं। दिल्ली में 'अनुशासन' नाम से यूपीएससी आईएएस सुविधा संचालित है। इंदौर में 'आचार्य ज्ञानसागर छात्रावास' एवं 'प्रतिभा-प्रतिक्षा' है।

आप श्री के आशीर्वाद से कुण्डलपुर (दमोह-मध्यप्रदेश), नेमावर, (देवास-म.प्र.), रामटेक (नागपुर-महाराष्ट्र), विदिशा (म.प्र.), अमरकण्टक (अनूपपुर-म.प्र.), बीना बारहा (देवरीकला-सागर), तिलवाराघाट (जबलपुर), डोंगरगढ़ (राजनांदगांव-छ.ग.), आदि स्थलों पर हजार वर्ष से अधिक वर्षों तक धर्म-ध्यान होता रहे, ऐसी अध्यात्म भावना से पाषाण के कलात्मक भव्य जिन मंदिरों में से कुछ का निर्माण हो चुका है और शेष का निर्माण कार्य कुछ ही वर्षों में पूर्ण होने वाला है। अनेक स्थानों पर छोटे जिनालय बन चुके हैं।

आराधक की वाणी और सार्थक सम्प्रेषण का योग समन्वित होकर कुशल कवि, प्रखर वक्ता की लेखनी से उत्कृष्ट साहित्य का सृजन हुआ है। जन-कल्याण की भावना से कन्नड़ भाषी होकर भी प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, कन्नड़, बांग्ला, अंग्रेजी और राष्ट्र भाषा हिन्दी के भंडार की श्री वृद्धि में आपका योगदान अपूर्व है। आपका हिन्दी में सृजित चर्चित कालजयी महाकाव्य 'मूकमाटी' अप्रतिम कृति है। यह शोषितों के उत्थान का प्रतीक है। 300 से अधिक समालोचकों की लेखनी कृति को रेखांकित कर चुकी है। ग्यारह संस्करणों में भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से प्रकाशित यह महाकाव्य हिन्दी, मराठी, कन्नड़, बांग्ला और अंग्रेजी भाषाओं में अनुदित हो चुका है। अंग्रेजी संस्करण का महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल के कर-कमलों से सन् 2011 में लोकार्पण हुआ है। 'नर्मदा का नरम कंकर', 'डूबो मत लगाओ डुबकी', 'तोता क्यों रोता?' 'चेतना की गहराई में', छः संस्कृति शतक, दस हिन्दी शतक, अनेक ग्रंथों का पद्यानुवाद के साथ ही जापानी साहित्य की सारभूत विधा 'हाइकु' जिसमें पहले पांच, फिर सात और अंत में पुनः पांच अक्षरों से भावों की अभिव्यक्ति होती है, इस शैली में आपने तीन सौ पचास से अधिक हाइकुओं की रचना की है।

तपोमूर्ति ने अपने परिचय में कहा है- 'मेरा परिचय वही दे सकता है, जो मेरे भीतर डूब जाए। मैं जहां बैठा हूँ वहाँ तक पहुंच जाए। आपकी दृष्टि वहीं तक पहुंच पाती है जहाँ मैं हूँ। मेरा सही परिचय तो यही है कि मैं चैतन्य पुंज आत्मा हूं जो इस भौतिक शरीर में बैठा हूं। सैकड़ों वर्षों से दिगम्बर साधु की चारित्रिक विशेषताएं केवल शास्त्रों में रही है वह आपमें समाहित है। चौबीस घंटों में सिर्फ एक बार खड़गासन मुद्रा में खड़े होकर दोनों हाथों की अंजुली में प्रासुक गरम जल, दूध, दाल, चावल, दलिया जैसा सीमित भोजन ही ग्रहण करते हैं। आपने चीनी, नमक, हरी-सब्जी, रस, फल, तेल, सूखे मेवा आदि का आजीवन त्याग कर रखा है। लकड़ी के तख्त पर अपनी इंन्द्रिय शक्ति को नियंत्रित करते हुए तप की साधना से एक ही करवट से लगभग तीन घण्टे शयन करते हैं। दिन में सोने का त्याग है। सभी भौतिक साधनों एवं वाहनों का त्याग है। शरीर पर कुछ धारण नहीं करते हैं। दिगम्बर साधु के नियमानुसार सभी मौसम में पूर्णतः दिगम्बर नग्न अवस्था में रहते हैं। पैदल ही विहार करते हैं। शहर से दूर खुले मैदानों, नदी किनारों, पहाड़ों जैसे शांत स्थलों पर साधना को प्राथमिकता देते हैं। बिना बताए विहार करते हैं। बिना प्रचार-प्रसार पिच्छी परिवर्तन करते हैं। समाज जन आपको चलते-फिरते भगवान मान कर चरणों में नमन करते हुए कभी तृप्त नहीं होते हैं। आपके दर्शन पाकर स्वयं के भाग्य को सराहते हैं।

ऐसे मानव जीवन को दिशा प्रदाता योगीश्वर का बचपन का नाम विद्याधर था। धार्मिक माता श्रीमंती जी और पिता मल्लपा पारस जी अष्टगे के यहाँ आपका जन्म आश्विन शुक्ल 15, संवत 2003, 10 अक्टूबर 1946 को कर्नाटक के ग्राम 'चिक्कोड़ी' (जिला- बेलगांव) में हुआ था। आप पर बचपन से ही साधुओं का गहरा प्रभाव पड़ा था।

संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित 84 वर्षीय आचार्यश्री ज्ञानसागर के चरणों में अजमेर में रह कर वास्तविक शिक्षा ग्रहण की। चार महाकाव्य और 24 ग्रंथों के सृजक ज्ञानसागर से आषाढ़ शुक्ल पंचमी, वि.सं. 2025, रविवार 30 जून 1968 को मुनि पद से विभूषित होते समय आपने गुरु चरणों में निवेदन किया:- 'मैं सकल चराचर जीवों को क्षमा करता हूं, सभी मुझे क्षमा करें। मैं अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी के द्वारा प्ररूपित अनादिकालीन श्रमण-धर्म की शरण को स्वीकार करता हूं। आपकी चरण-शरण को स्वीकार करता हूं, जैनेश्वरी-दीक्षा प्रदान कर अनुग्रहीत करें।' वृद्धावस्था की चरम परिणति के कारण अजमेर जिले के नसीराबाद में मगसिर कृष्ण द्वितीया, संवत् 2021, बुधवार 22 नवम्बर, 1972 को गुरु ज्ञानसागर ने संस्कारित कर आपको अपना आचार्य पद सौंप दिया। ज्ञात इतिहास की यह पहली घटना थी, जब किसी आचार्य ने अपना पद विसर्जित किया और स्वयं मुनि होकर निचले आसन पर विराज गये। अतुलनीय शिष्य ने अपूर्व सेवा करके अनन्य गुरु का नसीराबाद में शुक्रवार, एक जून 1973 को समाधिमरण कराया।

आपके वैराग्य-पथ से प्रभावित होकर माता श्रीमंती जी आर्यिका समयमती जी, पिता मल्लपा जी मुनि श्री मल्लीसागरजी, भाई शांतिनाथ मुनिश्री समयसागर जी, अनन्तनाथ हो गये मुनिश्री योगसागरजी, बहनें शांता एवं स्वर्णा दीदी ब्रह्मचारिणी होकर सभी मोक्षमार्ग के पथिक बन आत्मकल्याणरत हैं। परिवार के आठ में से सात सदस्यों का मोक्ष-पथ अपनाना वर्तमान युग की अद्वितीय घटना है। आपसे दीक्षित लगभग सौ मुनिराज, दो सौ आर्यिका माताएं बाल ब्रह्मचारी हैं। हजार से अधिक दीक्षा ग्रहण करने को तत्पर हैं।

विज्ञान के इस युग की भौतिक चकाचौंध में आप महाव्रती ने भगीरथ जैसी जो ज्ञान की गंगा प्रवाहित की है, जिसके द्वारा भाषा, संस्कृति, समाज, राष्ट्र और विश्व को विनाश से रोका जा सकता है।

- निर्मल कुमार पाटोदी, इंदौर

जैन धर्म में तपतीर्थ, ज्ञानतीर्थ, संयमतीर्थ आदि कहे गये हैं

जैन धर्म यह विश्व का अनमोल रत्न - राजनाथ सिंह, गृहमंत्री

आचार्य श्री १०८ ज्ञानसागरजी महाराज के सानिध्य में त्रिलोक तीर्थ क्षेत्र (बड़ागांव दिल्ली) में फरवरी में सम्पन्न हुई। प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर जैन धर्म, जैन सिद्धांत, जैन संत पर अपने तलस्पर्शी विचार समारोह के प्रमुख व अतिथि भारत के गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह जी ने जो रखे, उन्हीं के शब्दों में रिकॉर्ड किया हुआ है।

मिस्टर अतिथि इंजी. अरुण जी जैन, श्री के.सी.जैन, श्री विनयकुमार जैन, श्री महेन्द्र कुमार जैन और सभा में उपस्थित मेरी बहनें, भाईयों । मेरा जब स्वागत किया जा रहा था और साथ ही साथ प्रवीण जी और महेन्द्र जी जैसे लोग इस तीर्थ स्थल पर मेरे पधारने के कारण मेरा आभार व्यक्त कर रहे थे तो सचमुच मुझे हर्ष की अनुभूति नहीं हो रही थी। आभार तो मैं व्यक्त करना चाहता हूँ आप लोगों के प्रति कि ऐसे पवित्र तीर्थ स्थल पर आकर और परम पूज्य आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज जी जैसे संत का दर्शन करने का आप सभी ने मुझे अवसर प्रदान किया। इस स्थल पर मैं पहले भी आ चुका हूँ और अब दूसरी बार यहाँ आया हूँ लेकिन जो भव्य स्वरूप में इस तीर्थ स्थान का अब देख रहा हूँ उस समय इतना भव्य स्वरूप नहीं था। निर्माण कार्य तेजी के साथ चल रहा था।

कभी-कभी लोग सवाल पैदा करते हैं कि तीर्थ स्थान निर्माण करने से क्या होता है? दर्शन करने से क्या होता है? बहनो, भाईयों मैं कह सकता हूं कि गणित की छोटी-छोटी समस्याओं का समाधान यदि आस्था और विश्वास के आधार पर हो सकता है तो मनुष्य के जीवन के समस्याओं का समाधान आस्था और विश्वास के आधार पर हो सकता है, पर मेरे जीवन का अनुभव है कि, जिसके अंदर आस्था, विश्वास और श्रद्धा की कमी रहती है उसका जीवन कभी भी सार्थक नहीं हो सकता और जैन धर्म के बारे में मैं अच्छी तरह जानता हूँ। मैंने बहुत अधिक तो नहीं पर थोड़ा बहुत इसे समझने की कोशिश की है। आजकल कभी-कभी तथा कथित प्रगतिशील लोग यह सवाल खड़ा करते हैं कि यदि २१वीं सदी में सारा विश्व विज्ञान और तकनीक के साथ आगे बढ़ रहा है तो इस जैन धर्म की प्रासंगिकता क्या है? जो जैन धर्म सदाचरण की बात करता है और मुक्ति की बात करता है तो उसकी प्रासंगिकता क्या रहेगी?

शायद उन्हें इस बात की जानकारी नहीं है कि भारत की संस्कृति विश्व की श्रेष्ठतम संस्कृति है और इस भारत के संस्कृति का अनमोल रत्न यदि मैं मानता हूँ तो वह जैन धर्म ही है (तालियां) कोई यह कह सकता है कि आप जैन धर्म को भारतीय संस्कृति का अनमोल रत्न कैसे मानते है? तो मैं कहना चाहता हूं कि हमारा हिन्दू धर्म हमारे हिन्दुत्व की विचारधारा भी अहिंसा पर विश्वास रखती है लेकिन अहिंसा की इस विचारधारा को पराकाष्टा तक ले जाने का काम किसी धर्म ने विश्व में किया है तो वह एकमात्र जैन धर्म ने किया है (तालियाँ)। चलते हुये हमारे पैरों से कोई चीटी न दब जाये, श्वास लेते समय कोई कीटाणु की जिंदगी न चली जाये, इसकी चिंता यदि किसी धर्म में की जाती है तो केवल जैन धर्म में की जाती है।

अहिंसा में छोटे मन का व्यक्ति कभी-कभी विश्वास नहीं कर सकता। अहिंसा का रास्ता अपनाने के लिए मन बड़ा चाहिए और हमारे अटल जी भी कहा करते थे कि **छोटे मन से कोई बड़ा नहीं हो सकता और टूटे मन से कोई खड़ा नहीं हो सकता** (तालियाँ)

यह जैन धर्म प्रेरणा देता है समाज जीवन यदि जीना है और सार्थक जीवन यदि जीना है तो छोटे मन से सार्थक जीवन कभी नहीं जी सकता, बड़े मन से ही जिया जा सकता है और जिसका मन बड़ा होता है वही आध्यात्मिक होता है और जिसका छोटा मन होता है वो आध्यात्मिक नहीं होता है। सदाचरण की शिक्षा जो जैन धर्म देता है छोटे मन के लोग इसे कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में अपना नहीं सकता है, जैन धर्म जो मुक्ति की शिक्षा देता है, मुक्ति यह परमानंद के समतुल्य होती है। मनुष्य

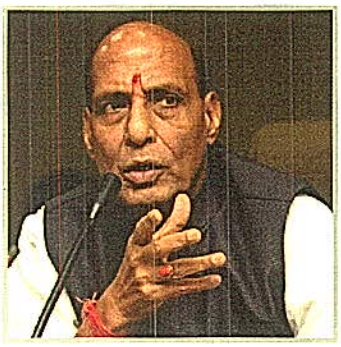

अपने जीवन में अपने सारे बंधनों से मुक्त हो जाना चाहता है उसे मुक्ति कहते हैं और यदि उदाहरण के तौर पर उसे समझना हो तो सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य ने सत्ता से संन्यास लेकर श्रमण बनने का जो फैसला लिया यही मुक्ति का भाव था जिसने उन्हें प्रेरित किया था। (तालियां)। कभी-कभी लोग सवाल खड़ा करते हैं, मैं ज्यादा नहीं बोलना चाहता लेकिन कुछ ऐसे सवाल हमारे मस्तिष्क में रोंदते हैं जान-बूझकर आप लोगों के सामने मैंने रखा। लोग कहते हैं कि आधुनिक विज्ञान और तकनीक साइंस टेक्नोलॉजी के युग में क्या अहमियत है साहब इसकी? शायद उनको मालूम नहीं है कि जैन धर्म एक वैज्ञानिक धर्म भी है (तालियाँ) और मैं प.पू. आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज से अनुरोध करूँगा कि यदि मुझसे कोई त्रुटि हो तो तुरंत आप संशोधन कर देंगे, क्योंकि जैन धर्म यह मानता है कि एक छोटे कण के कई कणों के समायोजन से ही इस अखिल ब्रह्मांड की रचना हुई है। और यह सच है और उस कण को पुद्गल कहते हैं। बहनो और भाईयों मैं विज्ञान का छात्र रहा हूँ, जो भी थोड़ी बहुत जानकारी है उस आधार पर मैं कह सकता हूं और आपको याद दिलाना चाहता हूं पढ़े-लिखे नवजवानों को यूरोप की सर्नप्रयोगशाला ने सन् २०१२ में उसने स्वयं इस हकीकत को स्वीकार किया है और जैन धर्म ने तो पता नहीं कितने हजार वर्ष पूर्व यह कह दिया था यह तो मैं नहीं कह सकता। यह जानकर आज का विज्ञान स्वीकार करता है अंग्रेजी में सामान्यतया यह कहना है तो मैं कह सकता हूं कि भारत की जो पुरानी कॉस्मिक क्वॅलक्युलेशनस जो हुआ करते थे और आज के मॉडर्न साइंस के जो कॉस्मिक क्वॅलक्युलेशनस है यह दोनों पूरी तरह से तालमेल हमको देखने को मिलता है।

अद्भुत है यह जैन धर्म, केवल ऐसा नहीं है कि समारोह में आने कारण मैं प्रशंसा कर रहा हूँ। यदि मुझे औपचारिकता निभानी पड़ती तो भाषण देने की क्या कला होती है? (हंसके)

ज्यादा कुछ न कहते हुए इस क्षेत्र को 'अहिंसा पर्यटक क्षेत्र के रूप में' घोषित करने के लिए पर्यटन मंत्री से कहूंगा। निश्चित रूप से हमारा विभाग होता तो मैं इसी समय घोषित कर चला जाता, लेकिन मैं जानता हूं मैं यदि कहूंगा तो शायद मेरी बात टलेगी नहीं। देखिए मैं बहुत संभालकर बोलता हूँ और संभलकर इसलिए बोलता हूँ कि, क्योंकि आजाद भारत की राजनीति में जब से चुनावी सिलसिला इस भारत में प्रारम्भ हुआ है और नेताओं ने जितने वादे किए हैं यदि आंशिक रूप से उसे निभाया होता तो हमारा यह भारत आज दुनिया का सबसे धनवान भारत बन गया होता। ताकतवर भारत बन गया होता और नेताओं के इस कथनी और करनी में अंतर होने के कारण ही भारत की राजनीति व नेताओं के प्रति जनसामान्य में विश्वास का संकट पैदा हुआ है। मैं विश्वास के इस संकट को गहरा नहीं करना चाहता। यदि इनका आशीर्वाद है हमारे ऊपर तो निश्चित रूप से हमें कामयाबी हासिल होगी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं पुनः प.पू. आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज के चरणों में शीश झुकाकर और सभी मुनिगणों के चरणों में अपना शीश झुकाकर हृदय से अपनी आस्था की अभिव्यक्ति करते हुए आप सभी जो आस्थागण मौजूद है उनके प्रति भी सम्मान की गहराई से अभिव्यक्ति करते हुए अपना निवेदन समाप्त करता हूँ, धन्यवाद।

संकलनकर्ता : महावीर दीपचंद ठोले, औरंगाबाद

सभी तीर्थ हमें आत्मोन्नति की प्रेरणा देते हैं।

तमिलनाडु वैभव की एक झलक

- हुकमीचंद जैन (एक समर्पित समाजसेवी एवं तीर्थभक्त), पांडिचेरी

दक्षिण भारत का धर्म प्रदेश तमिलनाडु जैन धर्म का एक विशेष अनूठा प्राचीन क्षेत्र रहा है। जहां अनेकों मुनियों ने आकर धर्म साधना करके अपने को कृतज्ञ किया। ऐसे क्षेत्रों में जैन धर्म बहुत पूरे तमिलनाडु में फैला हुआ था। ज्यादातर पान्ड्य क्षेत्र में मदुरै के आसपास और साउथ आरकाट की तरफ रहा। आचार्य भगवन 108 कुन्द कुन्द स्वामी की तपस्या स्थली रही पोन्नूर मलै पोनूर गांव का नाम है और उसके पास करीब 2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित पहाड़ी है जहां पर आचार्य कुन्द कुन्द देव ने धर्म साधना (तपस्या) की है और उनको एक बार यह भाव हुए कि क्यों न मैं भी विदेह क्षेत्र में जाकर सीमंधर आदि 20 तीर्थंकरों के दर्शन करूं। उन्हीं भावना के अनुसार देव लोक से 4 देव आये उनको इलायची का रूप बनाकर विदेह क्षेत्र ले गये, वहां पर 8 रोज रहे। साक्षात श्री सीमंधर स्वामी के समवशरण में दर्शन किये और 8 दिन बाद वापस भरत क्षेत्र में देव लोग आकर छोड़ गये। आचार्य अकलंक व निकलंक बस्ती करुन्दै रही है ये दोनों सगे भाई थे जिन्होंने बौद्धों को शास्त्रार्थ में पराजित किया। अकलंक एक पाटी थे, निकलंक दो पाटी थे। अकलंक की जन्म भूमि यही रही है। यहां पर अकलंक निकलंक की समाधि भी वर्तमान में मौजूद है। ऐसी जगह-जगह पर जैन धर्म का फैलाव भरपूर रहा है। पहाड़ियों में जंगल में जहां मुनिराज निवास करते हैं। गुफाएं, कन्दराएं, शिलालेख, पहाड़ियों में पत्थर में मूर्तियां, प्राचीन मंदिर, बड़े-बड़े शिखर गुम्बज वाले मंदिरों की बनावट इत्यादि देखकर मन में बड़ा आनंद आता है। ऐसे इस तमिलनाडु में कई दर्शनीय स्थल हैं।

तमिलनाडु में पेरानी (Perani) में जन्मा एक व्यक्ति जिसका नाम 'श्रीधरन', उम्र- 52 वर्ष, मो.09787300357 है। अभी पिछले 17 वर्षों से पांडिचेरी में रह रहा है। धार्मिक परिवार वाला यह सज्जन व्यक्ति हैं। पूरे क्षेत्रों की जानकारी एवं अनुभवी है। इस व्यक्ति ने जनवरी 2014 से प्रत्येक माह के प्रथम रविवार को एक अहिंसा रैली पदयात्रा जैसी निकालता है। अभी तक जुलाई 2015 तक करीब 20 रैली निकाल चुके हैं। करीब 200 से 400 तक श्रद्धालु जैन लोग पूरे तमिलनाडु से दर्शनार्थ आते हैं। इस बार अभी हाल में 5 जुलाई 2015 को आंध्र प्रदेश में आचार्य कुन्दकुन्द की जन्म स्थली कुन्दकुन्दला में करीब 900 जैनों की अहिंसा रैली बड़ी सुन्दर रही। अब तक निकाली गई 20 रैली का पूरा पूरा विवरण इस प्रकार है - (1) उरणी तार्गल (2) नेगनूर पट्टी (3) पल्लूर दिन गुणम (4) कन्जीपुर (5) ओणमपाकम (6) विलयनगर (7) कोणेपुदुर (8) त्याग दुर्गम (9) वल्लीमलै (10) सीयमंगलम् (11) मरकोणम् (12) आरची पाकम (13) अनन्त मंगलम् (14) श्री कडम्बूर (15) तीरूनरम कुण्डरम् (16) ऐनापरम (17) कलगुमलै (18) कोल्लीमलै (19) तिरूमलै (20) कुन्द कुन्दला।

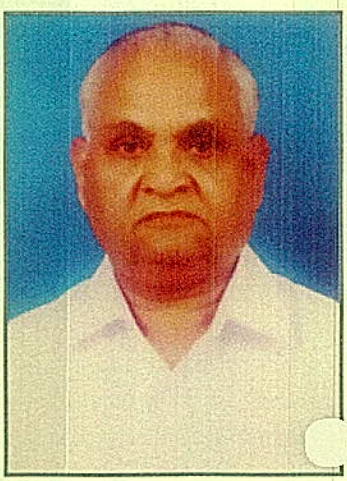

इसके अलावा भी कई जगह जाकर दर्शन किये हैं। तमिलनाडु में करीब 100 से ज्यादा स्थानों पर अखंडित मूर्ति व खंडित मूर्तियां खुली जगह में जंगलों व गांवों में भी बिखरी पड़ी हैं। इनका संरक्षण भी करीब 7 स्थानों का हो चुका है। आगे भी कार्य चालू है। जिन जगह मूर्तियों को सुरक्षित किया गया है उन स्थानों के नाम इस प्रकार है-

(1) अरवनीपुर (2) पादिरप्पुलीपुर (3) पादुर (4) टी. कोलणूर (5) मारंगीपुर (6) आरकाट (7) वीर पांडी।

तमिलनाडु के जैन साईटों की एक डीवीडी/सीडी जिसमें करीब 8400 फोटो हैं वह तैयार हो चुकी है जिनमें मंदिरों के दर्शन, मूलनायक भगवान के नाम, गांव के नाम, तहसील व जिला सहित दर्शाया गया है- चित्रकारी, भव्य शिखर, ताडपत्र, शिलालेख, मुनियों के रहने की गुफाएं, शय्याएं, जंगलों में पहाड़ों पर पत्थर पर मूर्तियां इत्यादि दर्शाया गया है। यह सीडी शीघ्रता से आपके हाथों में आने वाली है। यह सीडी बनाने का श्रेय पांडिचेरी निवासी श्री हुकमीचंद जैन (ठोलिया) के अथक प्रयास से करीब 8 वर्ष में पूर्ण हुआ है, यह सीडी फ्रांस सरकार के खर्च से बनाई गई है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई ने भी इस सीडी के निर्माण में 5 लाख रुपय की राशि का सहयोग दिया है। सबको साधुवाद। इसी संदर्भ में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन, मंत्री श्री खुशाल जैन 'सी.ए.' एवं चेयरमैन श्री सुनील जैन 'शिवम्' ने इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर डॉ. पियरे ग्रार्ड एवं पदाधिकारियों से शीघ्र सी.डी. सौंपने हेतु पांडिचेरी में बैठक कर चर्चा की, जिसका उन्होंने शीघ्र ही सी.डी. देने का आश्वासन दिया। सीडी बहुत ही सुन्दर ढंग से बनाई गई है, करीब 450 स्थानों से भी अधिक जगहों की जानकारी इस सीडी में उपलब्ध होगी। इसके अलावा भी काफी जानकारियां इस सीडी के माध्यम से आपको मिलेगी। सीडी में अनेकों चित्र भी हैं उसके नीचे अंग्रेजी में फोटो का विवरण लिखा हुआ मिलेगा। आप पूरे भारतवर्ष के जैन समुदाय को नम्र प्रार्थना है कि एक बार तमिलनाडु की यात्रा अवश्य करें।

जय जिनेन्द्र।

जिसमें जिनदेव विराजमान हैं, वह तीर्थ है (उत्तरपुराण 54, 5)

श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महामस्तकाभिषेक का आयोजन फरवरी 2018 में

- जगतगुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री भट्टारक चारुकीर्ति स्वामी जी

देश विदेश के लाखों लोग भाग लेंगे, महोत्सव की तैयारियां प्रारम्भ

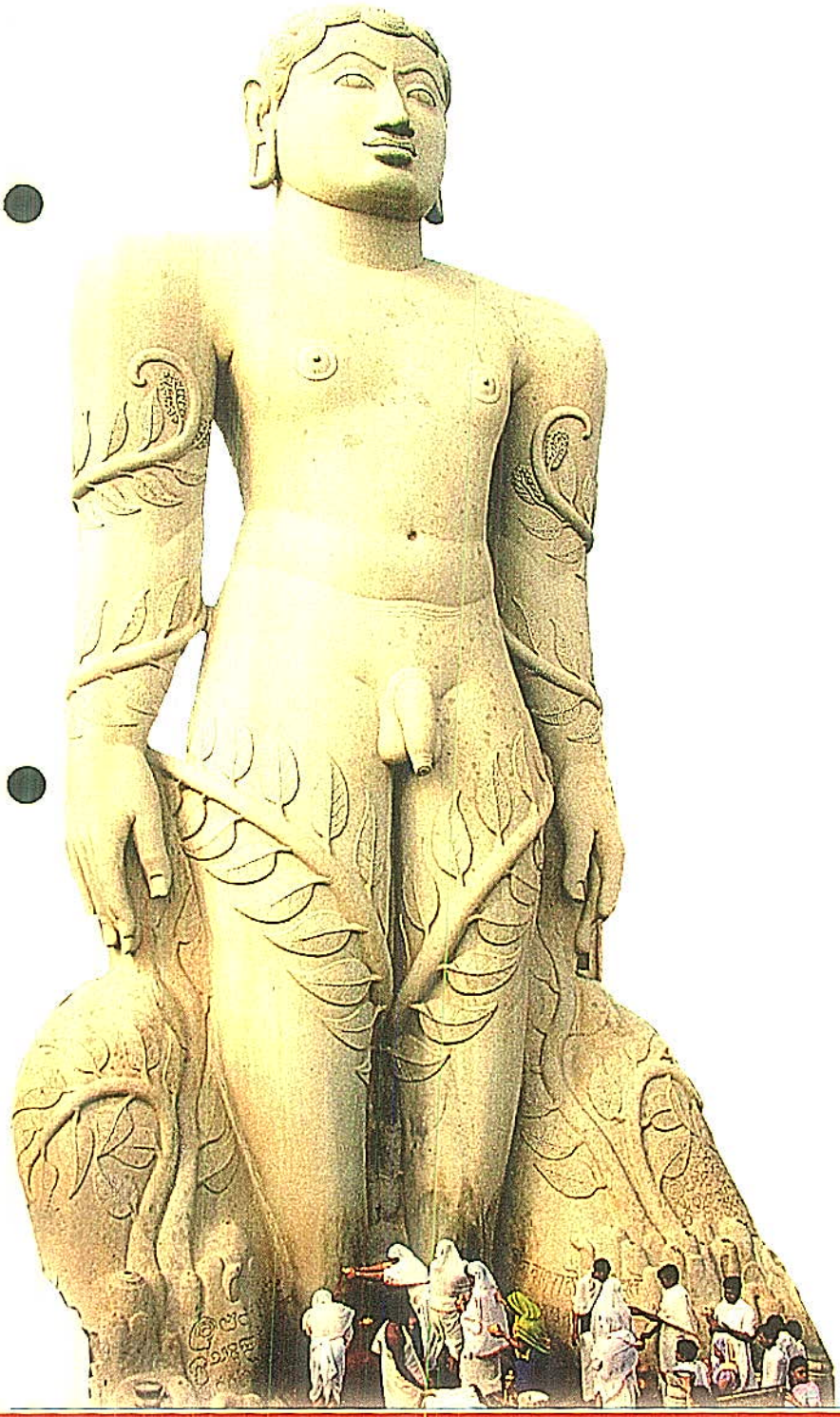

- एस. जितेन्द्र कुमार कार्याध्यक्ष मनोनीत
- राष्ट्रीय समिति की अगली बैठक 6 सितम्बर, 2015 को
- अनेकों आचार्य साधु संतों का सान्निध्य मिलेगा
- कई सम्मलेन
- जनकल्याण की योजनाओं को गति मिलेगी

विश्व प्रसिद्ध भगवान बाहुबली की 57 फीट ऊंची प्रतिमा का अगला महामस्तकाभिषेक फरवरी, 2018 के प्रथम सप्ताह में प्रारम्भ होगा। इस आशय की घोषणा जगतगुरु कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति स्वामीजी ने विगत दिनों क्षेत्र पर पत्रकार सम्मेलन में की जिसमें विभिन्न भाषाओं के पत्रकार एवं न्यू चैनलों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। जिसमें स्वामीजी ने कहा चूंकि महोत्सव अंतर्राष्ट्रीय महत्व का है इसलिए इसके आयोजन की घोषणा 2 साल 10 महीने पहले की जा रही है।

कर्नाटक जैन एसोशिएशन के अध्यक्ष एस. जितेन्द्र कुमार, बेंगलोर को इस आयोजन का कार्याध्यक्ष मनोनीत किया गया है। स्वामी जी ने कहा कि इस आयोजन में केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार का भरपूर सहयोग रहता है और इस संबंध में शीघ्र ही एक शिष्ट मंडल इन दोनों सरकारों से मिलेगा। स्वामी जी ने बल देकर कहा कि बेंगलोर-हासन रेलवे लाइन को महोत्सव से पहले पूर्ण किया जाये, ताकि यात्रियों का आवा गमन बहुत सुलभ हो जाये। स्वामी जी ने बताया कि यह आयोजन 10 दिन का होगा और इसकी तैयारियों के लिए राष्ट्रीय समिति की पहली बैठक 6 सितम्बर, 2015 को श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोला में होगी।

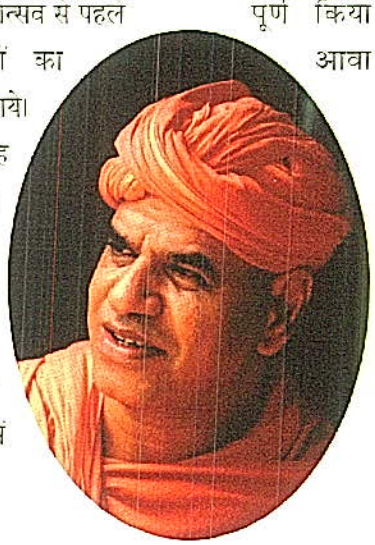

प्रेषक : अनूपचन्द्र जैन
एडवोकेट, फिरोजाबाद

न्यायनिष्ठ की सम्पत्ति कभी कम नहीं होती । वह दूर तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है (तिरुवल्लूर)

ऊर्जा महिला संभाग, मुंबई का खुला अधिवेशन सानंद सम्पन्न

श्रीमती नीता खुशाल जैन, मुंबई

हम सब भारतीय संस्कृति से अपनी परंपराओं को निभाते हुए नए युग से ताल से ताल मिलाते हुए आगे बढ़ते हैं। अतिथि देवो भवः कितना आनंददायक क्षण होता है जब हम किसी का सम्मान करते हैं।

दिगम्बर जैन महिला संभाग मुंबई को इस बार यह सौभाग्य मिला। हमारी राष्ट्रीय प्रकोष्ट मंत्री श्रीमती शीलाजी दोढीया एवं भारत की जैन समाज की प्रतिष्ठित एवं बहु प्रतिभामुखी हमारी डॉ. नीलम जैन के सम्मान में हमारी सखियों ने बोरीवली त्रिमूर्ति में एक प्रोग्राम रखा।

हमें बहुत खुशी हुई कि हमें दो महान हस्तियों के सान्निध्य में रहने का सौभाग्य मिला। सर्वप्रथम श्रीमती हीरा जैन ने सुमधुर आवाज में पंचपरमेष्टि का आह्वान किया, तत्पश्चात श्रीमती वंदना सालगिया ने मंच संभालते हुए हमारे अतिथियों का परिचय दिया तथा शाल और श्रीफल से सम्मानित किया। आज के परिवेश के उठते हुए मुद्दों को सभा में सदस्यों के द्वारा बड़े अच्छे शब्दों में व्यक्त किया।

श्रीमती शीलाजी दोडिया ने हमें उद्बोधन में बहुत जानकारी देते हुए बताया कि हमें जैन कुल तो मिला, किन्तु संस्कार पाठशाला के माध्यम से ही मिलते हैं। प्रत्येक सदस्य पाठशाला से जुड़े इसके लिए एक घर-घर पाठशाला नामक 30 प्रश्नों का एक प्रश्न मंच प्रत्येक माह में शुरू करें।

कार्यक्रम की अगली कड़ी श्रीमती डॉ. नीलम जैन ने बताया कि किस तरह हमारे जैन समाज के बाहर भी हर एक प्रतीक का साइंस के अनुसार वर्णन किया गया। अशोक वृक्ष का उदाहरण देते हुए बताया कि इस वृक्ष की जड़े कभी फैलती नहीं गहराई में होती हैं जो कि जैन का सिद्धांत भी है ऊँचाई बाद में गहराई पहले अर्थात गूढ़ चिंतन।

हमारी सदस्यों को अध्यक्षा श्रीमती संगीता कासलीवाल ने संबोधन किया तथा अन्य सदस्यों ने योग, संस्कार, संयुक्त परिवार, मानवता एवं नारी शक्ति के बारे में अपने विचार रखे। श्रीमती नीता जैन ने बताया कि हम और अध्यक्षा संगीताजी आचार्यश्री विद्यासागरजी के पास जबलपुर गए, गुरुवर का आशीर्वाद मिला एवं मुनिश्री विनम्रसागरजी से आगे के प्रोजेक्ट के बारे में चर्चा की। उन्होंने जीओ और जीने दो की परिभाषा में बताया कि स्वयं तो आगे बढो पर सबसे पहले अपने सगे-संबंधी, भाई, पड़ोसी और मित्रों को भी आगे बढ़ाओ। फिर दान करो यहीं इस शब्दों की सार्थकता है। इसी के साथ कार्यक्रम सधन्यवाद विसर्जित हुआ।

धन से सुविधायें मिल सकती हैं सुख नहीं।

आचार्यश्री विद्यासागर का सुझाव

नोट पर छापे जाएं गाय के चित्र

- संजय जैन, देवरी

जैन संत आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने मध्यप्रदेश के पंचायत मंत्री श्री गोपाल भार्गव के जरिए देश के नाम संदेश भेजते हुए कहा कि भारतीय मुद्रा पर अब गाय का चिह्न अंकित होना चाहिए, क्योंकि गौ धन सबसे बड़ा धन होता है।

आचार्यश्री विद्यासागरजी ने अपने उद्बोधन मे रोमांस आफ द काऊ पुस्तक का उल्लेख करते हुए कहा कि इस पुस्तक में लिखा है कि पूरी धरती गाय के सींग पर टिकी हुई है। इस गाय की रक्षा करना हमारा ही नहीं सरकार का भी कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि गौ धन का मूल महत्व और स्वरूप जानने का प्रयास होना चाहिए। आचार्यश्री ने दावा किया कि गाय पर शोध के लिए एक दो वर्ष नहीं पूरा जीवन लगा दिया जाए तो शोध पूरा नहीं हो सकता है। गाय पर शोध नहीं बोध होना चाहिए जो मूक रहकर हमें सब कुछ देती है। गाय एक मात्र ऐसा जानवर है जो जिस घर में रहती है वहां सुख और समृद्धि स्वतः होती है। गाय हम सबको अमृत का पान कराती है।

पंचायत मंत्री श्री भार्गव ने आचार्य श्री के दर्शन किये और उन्हें विश्वास दिलाया कि ये संदेश प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तक अवश्य पहुंचायेंगे साथ ही इस संबंध में श्री अरुण जेटली वित्त मंत्री एवं प्रधानमंत्री जी को शीघ्र ही पत्र लिखेंगे। श्री भार्गव ने गौ संवर्धन के लिये मध्य प्रदेश में हो रहे प्रयासों की भी जानकारी दी।

धनपाल सिंह जैन, श्रीकिशोर जैन संस्कार रत्न से सम्मानित

नई दिल्ली। दिगम्बर जैन नैतिक शिक्षा समिति, दरियागंज के अध्यक्ष श्री धनपाल सिंह जैन और कार्याध्यक्ष श्री श्रीकिशोर जैन को संस्कार रत्न की उपाधि से विभूषित करते हुए राष्ट्र संत शाकाहार प्रवर्तक उपाध्याय श्री गुप्तिसागरजी महाराज ने कहा कि पिछले २७ वर्षों से ये लोग बच्चों को संस्कारित करने का अद्भुत कार्य कर रहे हैं। प्रतिवर्ष ये लोग दस हजार बच्चों को संस्कारित करते हैं। नन्हें बच्चों को णमोकार मंत्र सिखाया। जीव-अजीव की पहचान बताई। उपाध्यायश्री रविवार १४ जून को रोहिणी सेक्टर-७ स्थित गोल्डन टेम्पल में नैतिक शिक्षण शिविर के समापन समारोह में बोल रहे थे। इस अवसर पर जैन समाज के अग्रणी महानुभावों के साथ बीजेपी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता भी मौजूद थे।

उपाध्याय श्री ने कहा नैतिकता को अपने आचरण में उतारना होगा। स्वच्छ भारत का निर्माण पाश्चात्य संस्कृति में उलझ कर नहीं बल्कि नैतिकता से अपने जीवन को संवारने से होगा। पश्चिमी संस्कृति नहीं, विकृति है। बच्चों को राम-महावीर बनाना हो तो नैतिकता की जरूरत होगी। माता पिता जिस राह चलें उसी राह चले संतान। जैसा आपका आचरण सुंदर और सुशील होगा वैसा ही आचरण बच्चों का होगा।

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व. दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

क्रोध रूपी अग्नि, पुण्य रूपी रत्नों को जला देती है।

श्री उर्जयन्त गिरनार सिद्धक्षेत्राय नमः श्री अरिष्ट नेमिनाथाय जिनेन्द्राय नमः आचार्य निर्मल सागराय नमः

यदुवंश शिरोमणी नारायण श्रीकृष्ण महाराज के चचेरे भाई भगवान नेमीनाथ की तप - ज्ञान - व निर्वाण कल्याणक पावनभूमि तथा प्रद्युम्नकुमार, शम्बुकुमार, अनिरुद्धकुमार, गजकुमार आदि मुनिराजो सहित बहत्तर करोड़ साढ़ती मुनिराजो की तपोभूमि व निर्वाण स्थली, आचार्य धरसेनस्वामी, पुष्पदंत-भूतबली, कुन्द-कुन्द, उमास्वामी आदि मुनिराजो की साधना स्थली एवं सिद्धांत शास्त्र की जननी ऊर्जयन्त गिरनार सिद्धक्षेत्र की महिमा अपरम्पार है।

परम पू. आचार्यश्री १०८ शांति सागरजी महाराज छाणी परंपरा के चतुर्थ पट्टाचार्य

गिरनार गौरव तीर्थरक्षा शिरोमणी श्रुत दिवाकर गिरनार केशरी

दिगम्बर जैनाचार्य प. पू. श्री १०८ निर्मल सागरजी महाराज

की पावन प्रेरणा आशीर्वाद एवं पावन सानिध्य में

श्री नेमिनाथ-मोक्ष कल्याणक लड्डू महोत्सव

: दिनांक :

21 से 23 जुलाई 2015,

(आषाढ़ शुक्ला सप्तमी)

कार्यक्रम स्थळ

आधुनिक धर्मशाला, समोसरण मंदिर, रूपायतन रोड, गिरनार, जूनागढ. (गुज.) दुरभाष : 0285-2627108

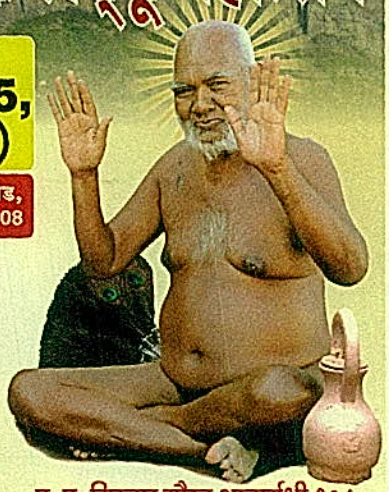

प. पू. गिरनार गौरव आचार्यश्री १०८ निर्मलसागरजी महाराज

आमंत्रण

मोक्ष कल्याणक लड्डू समर्पण

गुरूवार 23 जुलाई - 2015

आदरणीय धर्मानुरागी महानुभाव श्री

समाज के आप सभी स्वजनों को विदित ही है कि प.पू. गिरनार गौरव आचार्यश्री १०८ निर्मलसागरजी महाराज के अनवरत अथक प्रयासो एवं उपदेशो पूरु पार्थ के फलस्वरूप पिछले आठ वर्षो से गिरनार पर्वत की आलोक टोंक पर सहस्रो श्रावक - श्राविकाओं द्वारा निरंतर निर्वाण लड्डू चढाए जा रहे है। इसी शृंखला में इस वर्ष भी हजारो श्रावक - श्राविकाओं द्वारा निर्वाण-लड्डू चढाए जाने का भव्य आयोजन होने जा रहा है। गिरनार तीर्थक्षेत्र के मूलस्वरूप की सुरक्षा एवं उसके विकास हेतु निर्वाण-लड्डू महोत्सव का यह कार्यक्रम पर्याप्त सफल रहा है। पिछले आठ वर्षो में जैन यात्रियों की संख्या में भारी वृध्दि हुई है। अत: समस्त जैन श्रावक-श्राविकाओं से हमारा सविनय अनुरोध है कि भगवान नेमिनाथ के परम पावन निर्वाण - महोत्सव में आप सम्मिलित - मण्डल तथा सपरिवार पधार कर क्षेत्र की दिव्यकल प्रदायिनी वंदना करें तथा निर्वाण-लड्डू चढाने का शुभ अवसर प्राप्त कर पुण्य लाभ भी अर्जित करें। आचार्यश्री की प्रेरणासे गिरनार-सुरक्षा, सामाजिक जन-जागृति एवं क्षेत्र की अपार महिमा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से श्रुतस्कंध अहिंसा रथ के भारत-भ्रमण का अनुष्ठान इस समय पूरे देश में चल रहा है। जिसने अब तक १ राज्यो का भ्रमण सम्पन्न करके समाज को भी गिरनार सिध्दक्षेत्र की दिव्य महिमा का दिग्दर्शन कराया है।

अत: भगवान नेमिनाथ निर्वाणोत्सव उर्जयन्त गिरनार सिध्दक्षेत्र पर भगवान के श्री चरणो में लड्डू समर्पित करने का परम सौभाग्य प्राप्त करें और अपनी आत्मा को कल्याण के इन क्षणों से अवश्य पवित्र करें।

आपके शुभागमन की प्रतिक्षा में

श्री गिरनार महोत्सव-2015 के प्रमुख कार्यक्रम

21 जुलाई 2015 मंगलवार
: प.पू. गिरनार गौरव आचार्यश्री १०८ श्री निर्मलसागरजी महाराजका ४९ वा दीक्षा दिवस जयंती महोत्सव के शुभ अवसर पर आचार्यश्री की पूजन एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम

22 जुलाई 2015 बुधवार
- प्रातः ७ बजे : भगवान नेमिनाथ स्वामी की २२ फुट उत्तुंग प्रतिमाजी का महाभिषेक एवं पूजन-अर्चन।
- प्रातः ९ बजे : सर्व सिध्दिप्रदायक गिरनार-विधान
- सांय ७ बजे : मंगल आरती एवं विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम एक शाम निर्मलसागरजी के नाम

23 जुलाई 2015 गुरूवार
- प्रातः ७ बजे : मोक्ष कल्याणक लड्डू (२२ किलो का) आचार्यश्रीके मंगल सानिध्य में आलोक टोंक पर।
- दोपहर १२ बजे : स्वामिवात्सल्य (समोसरण मंदिर)
- दोपहर ३ बजे : भगवान नेमिनाथ का मोक्ष कल्याणक लड्डू (२२ किलो का समोशरण मंदिरजीमें)
- सांय ६ बजे : स्वामिवात्सल्य (समोसरण मंदिर)
- रात्रि ७:३० बजे : महाआरती - १००८ दीपकों द्वारा
- रात्रि ८ बजे : सांस्कृतिक कार्यक्रम

पावन निर्देशन - गिरनार पीठाधीश कर्मयोगी क्षुल्लक समर्पणसागरजी महाराज

समारोह के परम संरक्षक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष

- श्री अणुव्रत स्वस्तिश्री भावकीर्ति महारक महास्वामीजी अथणवेलगोला
- श्री स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी (जम्बूद्वीप - हस्तिनापुर)
- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी
- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
- श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासमिति
- श्री दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप केंद्रीयस्तर
- श्री दिगम्बर जैन मिलन

आमंत्रित विद्वान

- डॉ. श्री श्रेयांशकुमारजी जैन - बडौत
- डॉ. श्री जयकुमार जैन - मुझफ्फरनगर
- पं. श्री भरतकुमारजी काला - मुंबई
- डॉ. श्री नीलम जैन - पुणे
- पं. श्री दीपचंद शास्त्री - टीकमगढ
- पं. श्री महेन्द्र जैन मनुज - इन्दौर
- पं. श्री भीमराव हेमगिरे - कोल्हापुर

कार्यक्रम के संयोजक गिरनार अधिष्ठाता

गिरनार चंद्रिका
बा.ब्र. शान्तावेन जैन

ब्र. सुमत जैन

: आवास व्यवस्था :

श्री सचिन रविन्द्रकुमार बंडी
नीलमश्री इवेन्ट ऑकोर इंदौर

: भोजन सौजन्य :

श्री अभयकुमार नितिनकुमार, अर्पितकुमार जैन-साबरमती-अहमदाबाद

स्वागताध्यक्ष

- श्री शीशपालजी कटारिया-अहमदाबाद
- श्री राजेन्द्र जैन (एल.एल.ए. दीदिया)
- श्री अभयकुमार जैन - सावरणी, अहमदाबाद
- श्रीमती जैन-अमेरिका
- श्री रामकुमार अजितकुमार कडाया - लाखनल, अजमेर
- श्री महावीर प्रसाद चन्दन कडाया - मुंबई
- श्री अशोककुमार जैन - केकड़ी (अजमेर)
- श्री मेघराज पाटनी - अजमेर
- श्री तेजेश सुहासीया - अहिंसाधाट
- श्री मकरभाई पटेल (जय गणेश मंडल अहमदाबाद)
- श्री संदिपभाई कडाशीया-सी.ए.(मुंबई)
- श्री मंजीत सिंगेलकुमार जैन (बी.के.जे. कीचडी - हेदराबुद)
- श्री रमेशकुमार जैन (इंजीनीयर - सातना)

एक शाम निर्मल सागर के नाम द्वारा

श्री दिग. जैन संगीत मंडल - अजमेर प्रो. सुशिलकुमार पाटनी

: संगीतकार :
संतोष एण्ड पार्टी, बडौत
एवं शिवम साउंड, देहरादून

: विशेष आकर्षण :
जय गुरूमाँ विशुद्धाथ
बोहरा कालोनी, केकडी (राज.)

: मार्गदर्शन सहयोग :
श्री आशीषकुमार नवरत्नलालजी शाह, शिरोपाव-एवं श्रीमति शारदा प्रभातचंद जैन, अखिल जैन
शिरोपाटी, कोलकाता (प.ब.)

नेमिनाथ निर्वाण लड्डू महोत्सव समिति - गिरनार

संयोजक एवं ट्रस्टी

- बा.ब्र. शान्तावेन जैन - गिरनार
- श्री शोभाभगत कटारिया - अ'वाद
- श्री रमेशभाई गांधी - अहमदाबाद
- श्री विमलकुमार जैन - राजकोट
- श्री विजेन्द्र जैन - दिल्ली
- श्री शनि जैन - अमेरिका
- श्री अभयकुमार जैन - अहमदाबाद
- श्री ज्ञानचंदजी बडजात्या - मुम्बई
- श्री कंदर्पभाई बखारिया - मुंबई
- श्री पारसमलजी जैन - अहमदाबाद
- श्री सुभाषचंद जैन - राजकोट
- श्री जिनेन्द्रकुमार एस. घोकरी - अ'वाद

गिरनार यात्रा के मुख्य यात्राश्री : • श्री सोभाग्यमल कटारिया • श्री रमेशभाई री. शांती (अमरेलीवाले)

विशेष सहयोगी मंडल : श्री दिगम्बर जैन निर्मल युवा समिति - गिरनार

आयोजक - विश्वशांति निर्मल ध्यान केन्द्र ट्रस्ट

गिरनार तलेटी, भवनाथ, जूनागढ (गुज.) सम्पर्क सूत्र : 097120 81284, 094267 17901, 0285-2627108, 2650611

अतिशय क्षेत्र राजमल में नेमिनाथ मोक्ष कल्याणक लड्डू 23-जुलाई-2015 को चढाया जाएगा आप सभी आमंत्रित है - अध्यक्ष राजमल कमेटी

- सभी आगंतुको के लिये आवास एवं भोजन की समूचित व्यवस्था की गई है
- कृपया आने के पंद्रह दिन पूर्व सूचना अवश्य देवें, ताकि आपके आतिथ्य की समूचित व्यवस्था हो सकें।

नोंट : देव शास्त्र गुरू की विनय करते हुए यह पत्रिका पढकर जिनमंदीरजी में अवश्य लगा देवें।

Anger burns the nature of man just like fire burns things.

महाराष्ट्र अंचल द्वारा क्षेत्रों का अवलोकन

श्री सावरगांव क्षेत्र

श्री नांदेड क्षेत्र

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल द्वारा महाराष्ट्र के तीर्थक्षेत्रों का अवलोकन अंचल के पदाधिकारियों के द्वारा ३० मई, २५ को सुबह सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरि पर पहुंचने पर क्षेत्र दर्शन एवं क्षेत्र परिसर का अवलोकन किया गया। क्षेत्र पर चल रहे कार्य का निरीक्षण क्षेत्र मैनेजर यू.आर.शहा, खामगांवकर ने कराया। यह क्षेत्र सिद्धभूमि होने के कारण भारत के सभी श्रावक-श्राविका दर्शन करते आते हैं। अंचल के माध्यम से चल रहे कार्य की जानकारी क्षेत्र प्रबंधक को देकर भोजन उपरांत वहां से अतिशय क्षेत्र तेर (उस्मानाबाद) की ओर अंचल पदाधिकारी रवाना हुए। श्री १००८ भगवान महावीर स्वामी तेर क्षेत्र पर श्री बाबूराव पांगळ राजकुमार जगधने आदि पदाधिकारियों ने क्षेत्र पर चल रहे कार्य की जानकारी दी। क्षेत्र पर जीर्णोद्धार का कार्य मुनिश्री पवित्रसागरजी महाराज के निर्देशन में गति से चल रहा है। क्षेत्र के दर्शन कर अंचल के पदाधिकारी श्री अतिशय क्षेत्र सावरगांव (काटी) सोलापुर के लिये रवाना हुए। सावरगांव में सुभाष गांधी, नवनाथ माळी, बाहुबली मोहरे ने क्षेत्र का परिचय देकर अवलोकन कराया। अंचल पदाधिकारियों ने क्षेत्र दर्शन कर क्षेत्र पर चल रहे कार्य की प्रशंसा की। यहां के अध्यक्ष सप्तम प्रतिमाधारी व्रती हैं। आचार्यश्री विशुद्धसागरजी महाराज का जल्द ही कुछ वर्षों में सावरगांव में आगमन होने की संभावना है, ऐसी जानकारी क्षेत्र प्रबंधकों ने दी।

३१ मई, २०१५ को सुबह मिरज के पास आचार्य शीतलसागरजी महाराज तथा मुनिश्री चंद्रप्रभसागरजी महाराज के ससंघ दर्शन कर आशीर्वाद लेकर उदगांव क्षेत्र के दर्शन कर नांदणी क्षेत्र पर अंचल पदाधिकारी पहुंच कर दर्शन किये। भट्टारक स्वामी श्री जिनसेनजी महाराज सांगली के पास चल रहे विधान के लिये गये थे इस कारण हमारे दर्शन नहीं हुए। नांदणी क्षेत्र पर श्री रामगौंडा पाटील, श्री अनिल आदगौंडा पाटील जयसिंगपुर ने मठ एवं क्षेत्र की जानकारी दी। इसके पश्चात अंचल पदाधिकारी श्री क्षेत्र बाहुबली कुंभोज पहुंचे,

श्री कुंभोज बाहुबली क्षेत्र

वहां पर दर्शन एवं क्षेत्र अवलोकन कर क्षेत्र के अध्यक्ष श्री अप्पासाहेब चौगुले ने क्षेत्र जीर्णोद्धार की पूरी जानकारी दी। इसमें पहाड़ पर चल रहे विवाद को जल्द ही खत्म कर निर्विवाद रूप से क्षेत्र जीर्णोद्धार का कार्य करने का आश्वासित किया। बाहुबली क्षेत्र पर सीसी टीवी लगाने हेतु अंचल पदाधिकारियों से विनती की। इस चर्चा में श्री अजित पाटील, अमोल पाटील आदि पदाधिकारी उपस्थित थे।

बाहुबली क्षेत्र पर भोजन के उपरांत श्री क्षेत्र कुंथलगिरि की ओर अंचल पदाधिकारी पहुंचे। क्षेत्र के दर्शन तथा गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी महाराज के दर्शन लेकर आशीर्वाद लिया। क्षेत्र का अवलोकन कर चल रहे जीर्णोद्धार की अंचल ने प्रशंसा की। क्षेत्र पर श्री कुंथुसागरजी महाराज के जन्म दिवस के कार्यक्रम पर सभी भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भाविकों ने अपनी ओर से विनयांजलि दी। इस समय कुंथुगिरि क्षेत्र के पदाधिकारियों ने अंचल के पदाधिकारियों का सम्मान किया। इस क्षेत्र अवलोकन यात्रा में महाराष्ट्र अंचल के महामंत्री श्री देवेन्द्रकुमार काला, कोषाध्यक्ष श्री मनोज साहूजी का सदस्य श्री केतन ठोले, श्री महावीर साहूजी थे।

दिनांक १५ जून को सुबह अंचल के पदाधिकारी श्री अतिशय क्षेत्र जिंतूर नेमगिरि पहुंच कर दर्शन कर क्षेत्र अवलोकन किया। क्षेत्र पर चल रहे जीर्णोद्धार की जानकारी क्षेत्र के विश्वस्त एड. शरद कलमकर, श्री मनोहर सावजी, श्री धन्यकुमार सावजी, श्री विरकुमार सावजी ने दी। क्षेत्र के कार्यकर्तागण उत्साही होने के कारण क्षेत्र प्रगति पथ पर दिख रहा है। दोपहर में श्री अतिशय क्षेत्र शिरडशहापुर में पदाधिकारियों ने क्षेत्र दर्शन एवं क्षेत्र निरीक्षण किया। क्षेत्र का अवलोकन क्षेत्र अध्यक्ष श्री तेजकुमार झांझरी, श्री सुकुमार कंदी, चंद्रकांत बोराळकर आदि ने कराया। इसके पश्चात शाम श्री अतिशय क्षेत्र नांदेड़ पहुंचकर क्षेत्र दर्शन एवं क्षेत्र निरीक्षण किया। क्षेत्र की जानकारी क्षेत्र के अध्यक्ष श्री शांतिलाल कासलीवाल, सौ. अरुणा काला, श्री रमेश पाटनी, वर्धमान नाल्टे ने दी। इसी दिन श्री अतिशय क्षेत्र आसेगांव पहुंचकर क्षेत्र दर्शन एवं परिसर अवलोकन हुआ। क्षेत्र का परिचय क्षेत्र अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्द सेठी, श्री दिलीप दुरुगकर, कुलभूषण मिरकुटे आदि ने दिया। दिनांक १६ जून को सुबह श्री अतिशय क्षेत्र नवागढ़ पर दर्शन कर वहां पर चल रहे कार्य की जानकारी ली। इस समय श्री अशोक तरटे, लखन जैन उपस्थित थे।

दोपहर अतिशय क्षेत्र शेलगांव पर अंचल पदाधिकारी पहुंच कर दर्शन कर क्षेत्र अवलोकन किया। क्षेत्र पर चल रहे कार्य की जानकीर क्षेत्र अध्यक्ष श्री मधुकरराव अंबुरे, अनिल अंबुरे ने दी। इस क्षेत्र अवलोकन की यात्रा में अंचल अध्यक्ष श्री प्रमोद कासलीवाल, कोषाध्यक्ष श्री मनोज साहूजी, संरक्षक श्री सुरेश हुकुमचंद कासलीवाल का सदस्य श्री केतन ठोले थे।

- देवेन्द्र कुमार काला, औरंगाबाद

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

श्री शेळगांव क्षेत्र

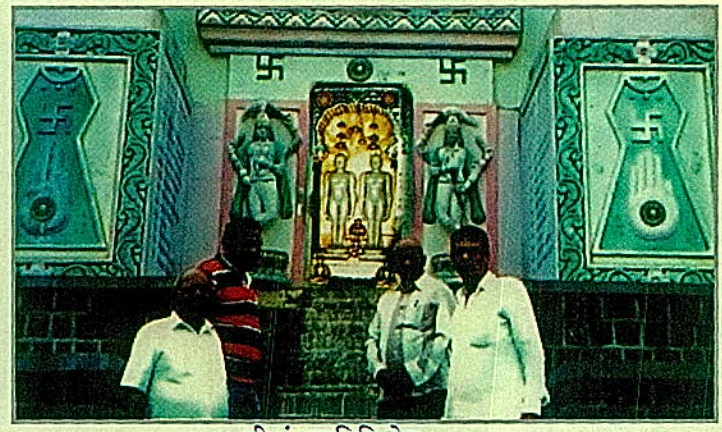

श्री कुंथलगिरि क्षेत्र

श्री आसेगांव क्षेत्र

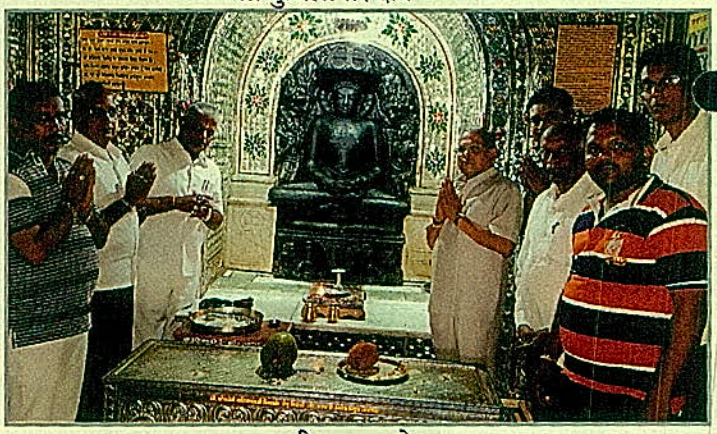

श्री नवागढ क्षेत्र

श्री तेर क्षेत्र

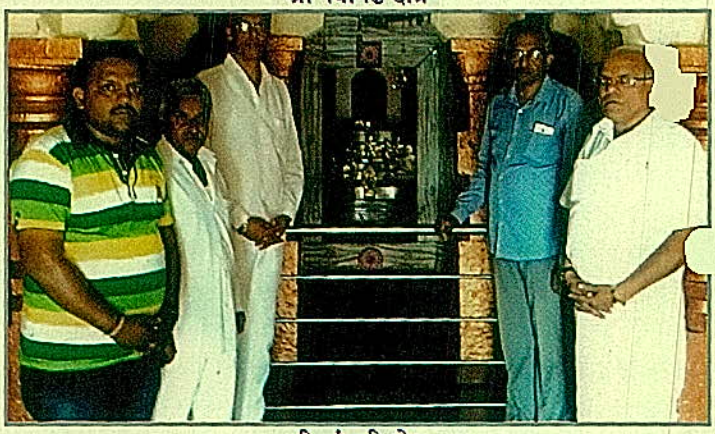

श्री नांदणी क्षेत्र

श्री शिरड शहापुर क्षेत्र

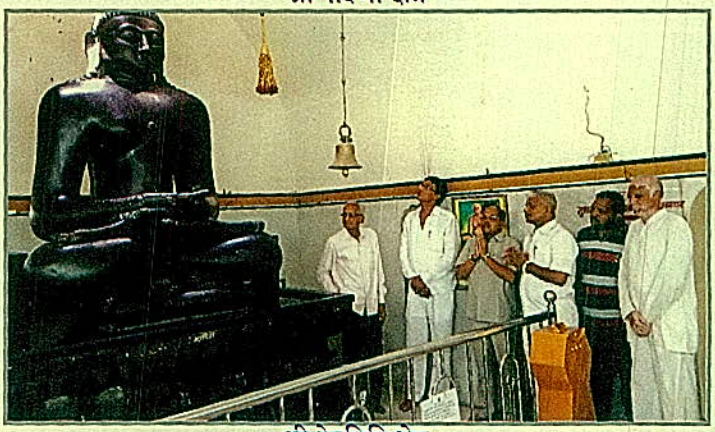

श्री नेमगिरि क्षेत्र

दिल्ली में बहती है संस्कारों की बयार

दिगम्बर जैन नैतिक शिक्षा समिति द्वारा नैतिक शिक्षण शिविरों का आयोजन गर्मियों की छुट्टियों में किया जाता है, जब बच्चे अपनी लौकिक शिक्षा के भार से मुक्त होते हैं। इसमें बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण कैसे किया जाता है, यह विधि बता रहे हैं। सामान्यतया ये शिविर लगभग १८ मई से ३० जून तक लगाये जाते हैं। शिविर की अवधि अधिकतर एक सप्ताह की होती है। शिविरों से पूर्व तीन से पांच दिन का प्रशिक्षण शिविर आयोजित करते हैं, जिसमें प्रमुख विद्वान हमारे अध्यापक मण्डल को प्रशिक्षित करते हैं कि बच्चों को कैसे ज्ञानार्जन कराएंगे और किस प्रकार संस्कारित करेंगे। शिविर संयोजक अपने नार्म्स बताते हैं और प्रतिवर्ष की प्रतियोगिताओं की जानकारी देते हैं।

ये सूचनाओं पोस्टर व समाचार-पत्रों के माध्यम से दी जाती है। मंदिरजी के प्रधान व महामंत्री हमें अपनी सुविधानुसार तारीख लिखवाते हैं। एक सप्ताह में ७ से १० शिविर तक आयोजित होते हैं, जिनका अधिकतर समय प्रातः ७.३० से ९.३० बजे होता है।

शिविरों की बुकिंग मार्च से ही शुरू हो जाती है। १० मई तक अधिकतर शिविर बुक हो जाते हैं। समिति उन सभी शिविरों में अपना बैनर, एडमिशन फार्म, भाषण विषयों का कलेंडर, अनिवार्य नियम आदि सूचनाएं प्रत्येक मंदिर को भेज दी जाती हैं। प्रत्येक शिविर आयोजक छात्र-छात्राओं की संख्या लिखाते हैं तदनुसार समिति कार्यालय से पुस्तकों की व्यवस्था की जाती है। शिविर आयोजक छात्र-छात्राओं के लिए बैग, कापी, पेन आदि की व्यवस्था करते हैं। शिविर के बाद आयोजनकर्ता बच्चों को मधुर पेय और नाश्ता भी वितरित करते हैं।

शिविर उद्घाटन पर दीप प्रज्ज्वलन कर बच्चों के हाथ में मंगलसूत्र और तिलक करते हैं और बच्चों को बताते हैं- सात नियम, अतिथि सत्कार, माता-पिता का आदर, कोर्स याद करने का तरीका आदि। सप्ताह के अंत में प्रत्येक शनिवार को परीक्षा ली जाती है। एक दिन बच्चों को देव दर्शन-पूजा आदि प्रेक्टिकल सिखाई जाती है। समापन पर प्रत्येक भाग में प्रथम दो स्थान प्राप्त करने वाले मेधावी बच्चों को समिति की ओर से पुरस्कृत किया जाता है। शिविर के दौरान सीखे गये संस्कारों को नाटक, भाषण द्वारा प्रदर्शन करते हैं।

अगस्त माह में ऑडिटोरियम बुक किया जाता है जहां सभी शिविरों का सामूहिक समापन होता है। इस समारोह में वही भाग लेते हैं जो समिति द्वारा एक सप्ताह पूर्व आयोजित स्क्रिनिंग में चयन किये जाते हैं। यह है शिविर संचालन की संक्षिप्त जानकारी।

अध्यापक प्रशिक्षण शिविर, वीरसेवा मंदिर, दरियागंज

कृष्णानगर में आयोजित शिविर में 550 बच्चे (4 से 14 जून 2015)

सात नियम कौन से हैं?

१. उठाते ही णमोकार मंत्र का जाप

२. बड़ों व माता-पिता के चरण स्पर्श व जयजिनेन्द्र। इससे बच्चों में ऊर्जा आती है। विनय, अनुशासन, संयम का प्रादुर्भाव होता है।

३. देव दर्शन।

४. पानी छानने की विधि तथा छानकर पानी पीने का प्रेक्टिकल कराया जाता है।

५. उसी रसोई का भोजन हाथ-पांव धोकर करना, जिसमें जूते-चप्पल नहीं जाते, क्योंकि जूते-चप्पलों में बहुत से बाहरी बेक्टेरिया हमारे भोजन के साथ पेट में पहुंच कर अनेक बीमारियों को जन्म देते हैं।

६. रात्रि भोजन का त्याग।

७. सोते समय णमोकार मंत्र का जाप।

इन सातों नियमों से बच्चों की दिनचर्या ही बदल जाती है और अभिभावकगण हमसे आकर लिपट जाते हैं कि जिंदगी में बच्चों ने हमारे पहली बार पैर छुए हैं, पहली बार शुद्ध रसोई हमारे घर में बनी है।

अतिथि सत्कार : घर में आए हुए अतिथियों का स्वागत बच्चे करते हैं। हाथ जोड़कर जयजिनेन्द्र करना, यथास्थान बैठाना, छना पानी देना। घर का सामान यथास्थान रखना। पिताजी शाम को जब दफ्तर से घर आते हैं, उनके हाथ से सामान लेना और छना पानी पिलाना।

ज्ञानार्जन : नन्हें बालकों को णमोकार मंत्र, २४ तीर्थंकरों के चिह्न सहित नाम, तीर्थंकर और भगवान में अंतर, जीव-अजीव का ज्ञान, इंद्रियां, गतियां, कषाय, ५ पाप और उनसे छुटकारा, १२ व्रत, तत्व, द्रव्य, ध्यान, कर्म, १४ गुणस्थान, १२ भावना, आचार्यों की जीवनी आदि क्रमवार ज्ञानार्जन कराया जाता है। कहीं नल बह रहा है, उसे बंदना करना। जहां भी बिजली-पंखा व्यर्थ चल रहा है, उसे बंद करना। पर्यावरण की सुरक्षा, मंदिर में जिनवाणी को यथास्थान रखना आदि बातों के बारे में विशेष रूप से बताया जाता है। प्रोत्साहन के लिये प्रति वर्ष नई-नई प्रतियोगिताएं कराई जाती हैं। इस वर्ष २०१५ में छहढाला, कला व भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

भाषण प्रतियोगिता : भाषण एक कला है। यह एक ऐसी कला है जिसमें व्यक्ति के गुणों का पता चलता है। सदाचार और चरित्रवान के मुख से निकली बातें सामने वाले को अत्यन्त प्रिय लगती हैं, क्योंकि वह निःस्वार्थ भाव से कल्याणकारी होती हैं। सुभाषचन्द बोस जब बोलते थे तो लोग उनके पीछे हो

णिग्गंथ वीयराया जिणमग्गे एरिसा पडिया। अर्थ- जिन प्रतिमा निर्ग्रन्थ, वीतराग होती है (बोधपाहुड़, गा.10)

जाते थे। क्रांतिकारियों की आवाज ने देश को आजाद करा दिया। धारा प्रवाह प्रभावपूर्ण शैली में जब बालक बोलते हैं तो उसका प्रभाव पड़ता है। अपनी बात दूसरों के सामने रखने की कला आनी चाहिए। आपने देखा होगा कुछ लोग बोलते हैं तो मानो उनके मुख से फूल झड़ते हैं। कुछ बोलते हैं मानो अमृत जैसी मधुरता होती है। कुछ अपने बोल से चंदन जैसी महक छोड़ जाते हैं। बहुतों के व्याख्यान से सभा तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठती है। लोग मुग्ध होकर सुनते हैं।

अपने बच्चों में अपनी बात कहने की कला का विकास हो, इसलिए दिगम्बर जैन नैतिक शिक्षा समिति प्रतिवर्ष ऐसे विषयों का चुनाव करती है जो सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय होते हैं। अच्छे वक्ताओं को प्रोत्साहन देने हेतु सम्मानित करती है, पुरस्कार देती है। प्रत्येक शिविर में बच्चे इन विषयों पर बोलते हैं। इससे भाषण टेक्निक का विकास होगा, अपनी बात कहने का साहस पैदा होगा। वर्ष २०१५ में (१) नैतिक शिक्षण शिविर एवं सुसंस्कारों की आवश्यकता (सामाजिक) (२) पंचकल्याणक (३) अपरिग्रह (४) जैन मुनियों की चर्या (धार्मिक) (५) स्वस्थ भारत स्वस्थ बच्चे, पर्यावरण सुरक्षा (राष्ट्रीय)- विषयों का चयन किया गया था। प्रथम दो स्थान पाने वालों को गोल्ड और रजत मैडल से पुरस्कृत किया गया।

कला प्रतियोगिता क्यों ? कला के विभिन्न माध्यमों से अपने मंदिरों, पर्वों, आराध्य देवों की अभिव्यक्ति की जाती है। प्राचीन काल में कलाकारों ने कलाकृतियों से अपनी संस्कृति को दर्शाए रखा। वह हमारे समक्ष मोहन जोदड़ों के रूप में अभी भी जागृत है। जैन कला ने धर्म एवं दर्शन के वैशिष्ट्य को समाहित किया है। वीतरागी तीर्थंकरों, बाहुबली, पंचकल्याणक, महत्वपूर्ण घटनाओं आदि कलाओं में त्याग और साधना की अभिव्यक्ति मिलती है। बच्चों में जैन धर्म और दर्शन का विकास हो, इसलिए दिग.जैन नैतिक शिक्षा समिति ने कला को भी ज्ञानार्जन के साथ प्रमुख स्थान दिया है। इन बनी हुई कलाओं को बच्चे जीवन भर भूलते नहीं। त्याग, साधना और अहिंसा मार्ग इन कलाओं में झलकता है, आध्यात्मिक और लौकिक सौहार्द प्रस्फुटित होता है, मनमाह लेने की शक्ति है।

हर बच्चे में कला की प्रतिभा छिपी होती है। जरूरत है ते उनके मनोभावों को प्रकट करने की। बच्चों की काबिलियत, उत्साहन, प्रकृति की सुंदरता, भावनाएं, विभिन्न रंगों से प्रकट होती है। अपने विचारों को व्यक्त करने का यह सर्वोत्तम माध्यम है। कला हमारों चारों तरफ है। छात्रों को अपनी अभिव्यक्ति के लिए, तनाव रहित जीवन, आनंद लेने का, प्रतिभा निखरने का सर्वोच्च जरिया है, सौंदर्यता का प्रतीक है।

वर्ष २०१५ में दिल्ली, मेरठ, गाजियाबाद, हरियाणा में कुल ६५ शिविरों का आयोजन हुआ जिसमें करीब १० हजार बच्चे और इतने ही बडों को ज्ञानार्जन कराया गया। पूरी दिल्ली शिविरमय हो जाती है। इन सब शिविरों का सामूहिक समापन २ अगस्त २०१५ को आजाद भवन, आईटीओ, दिल्ली में प्रातः ६ बजे किया जा रहा है।

यह है संस्कारों के बीजारोपण की कहानी। आचार्य-भगवंतों ने शिविरों को बहुत आशीर्वाद दिया है और कहा है कि इससे उत्तम कोई कार्य नहीं है। मंदिरों में तो पत्थर से भगवान बनाते हैं, शिविरों में आप लोग जीवित आत्माओं को भगवान बनने के संस्कार दे रहे हैं।

- श्रीकिशोर जैन

कार्याध्यक्ष एवं शिविर संयोजक, दिगम्बर जैन नैतिक शिक्षा समिति, दिल्ली

बड़े बाबा का मंदिर निर्माण सही

कुण्डलपुर में निर्माण की इजाजत को चुनौती देने वाली याचिका हाईकोर्ट से खारिज

दमोह जिले के कुण्डलपुर में श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र को बडे बाबा मंदिर निर्माण की इजाजत देने को चुनौती देने वाली याचिका हाईकोर्ट ने खारिज कर दी है। जस्टिस एसके गंगेले की एकलपीठ ने याचिका में उठाए गए तमाम बिन्दुओं को हस्तक्षेप योग्य न पाते हुए मामले में दखल देने से इनकार कर दिया।

हाईकोर्ट में यह याचिका जैन संस्कृति रक्षा मंच जयपुर (राजस्थान) के अध्यक्ष श्री मिलापचंद दांडिया की ओर से दायर की गई थी। आवेदक का कहना था कि मध्यप्रदेश सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा 26 जुलाई 2014 को श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर को बड़े बाबा के मंदिर निर्माण की इजाजत दी थी। याचिका में राहत चाही गई थी कि संस्कृति विभाग के प्रमुख सचिव के.के.सिंह द्वारा जारी आदेश को न सिर्फ खारिज किया जाए, बल्कि बड़े बाबा मंदिर के आसपास के निर्माण पर निषेधाज्ञा जारी करके हाईकोर्ट के फैसले के बाद किए गए सभी निर्माण हटाये जाने के निर्देश सरकार को दिए जाएं। इसी तरह एक राहत यह भी चाही गई थी कि प्रतिबंधित वन क्षेत्र में किए जाने वाले निर्माण को लेकर कानूनी कार्रवाई के निर्देश भी मुख्य वन संरक्षक को दिए जाएं।

मामले पर हुई प्रारंभिक सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से शासकीय अधिवक्ता श्री अजय प्रताप सिंह ने पक्ष रखा। उन्होंने अदालत को बताया कि बड़े बाबा के मंदिर निर्माण का मामला पहले भी हाईकोर्ट से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक दायर हो चुका है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिए गए दिशा निर्देशों के तहत ही संस्कृति विभाग ने अनुमति दी, जिसे अनुचित नहीं ठहराया जा सकता। रिकार्ड पर उपलब्ध सुप्रीम कोर्ट के फैसले का अवलोकन करने के बाद अदालत ने पाया कि सुको ने अपने फैसले में साफ तौर पर कहा था कि यदि सरकार मंदिर निर्माण की इजाजत देती है तो याचिकाकर्ता को उसे चुनौती देने का कोई हक नहीं होगा। उस मामले में याचिकाकर्ता भी अंतरवर्तीय पक्षकार था।

संस्कृति मंत्रालय द्वारा याचिकाकर्ता को सुनवाई का मौका न दिए जाने को लेकर दी गई दलील भी अमान्य करते हु अदालत ने कहा कि जब सुप्रीम कोर्ट ने ऐसी कोई व्यवस्था नहीं दी थी, तो आपत्ति का मुद्दा अब उठाया जाना अनुचित है। इस मत के साथ अदालत ने याचिका खारिज कर दी।

- दैनिक भास्कर से साभार

निर्मल धर्म, सम्यकत्व, संयम, तप और ज्ञान जैन धर्म में तीर्थ है (बोधपाहुड़ गा.27)

तीर्थक्षेत्र कमेटी के संरक्षक, समाज रत्न, गुजरात गौरव, श्रावक रत्न, जैन रत्न, सवाया गुजराती, ग्लौरी ऑफ गुजरात

प्रमुख उद्योगपति श्रीमान् ओमप्रकाशजी (बाबूजी) दिल्लीवाले का स्वर्गवास

सूरत : सूरत दिगम्बर जैन समाज के आधार स्तम्भ, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन समाज के उद्योगपति समाजरत्न, गुजरात गौरव, श्रावक रत्न, जैन रत्न, सवाया गुजराती, ग्लौरी ऑफ गुजरात धर्मवीर, दानवीर, समाज सेवी भामाशाह श्रीमान् ओमप्रकाश जैन जैन (बाबूजी) दिल्ली वालों का स्वर्गवास ७२ वर्ष की आयु में ता. २७-६-२०१५ को हो गया था। आप समाज श्रेष्ठी राजाभाई शाह, कमलेशभाई गांधी, महेन्द्रभाई शाह, प्रदीपभाई जैन, संजय दोशी के साथ सूरत से प.पू.आचार्य १०८ श्री विद्यासागरजी महाराज के दर्शन हेतु बीना बारहा तीर्थक्षेत्र गये थे। वहां से वापस लौटते समय विदिशा के पास ट्रेन में अचानक हृदयगति रुकने से अकस्मात निधन हो गया।

बाबूजी के निधन का समाचार मिलते ही पूरे सूरत में दिगम्बर जैन समाज ही नहीं अपितु सम्पूर्ण समाज में शोक की लहर छा गई। जैसे-जैसे लोगों को समाचार मिलते गये बाबूजी के घर लोग पहुंचते गए एवं उनके परिवार वालों को सांत्वना देते रहे।

बाबूजी को अनेक आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिकाओं का आशीर्वाद प्राप्त हुआ था, बाबूजी ने कभी भी किसी संस्था को सहयोग करने से मना नहीं किया जो भी संस्था के सदस्य बाबूजी के पास सहयोग के लिए जाते थे उन्हें मुक्त हाथों से सहयोग प्रदान करते थे।

बाबूजी के पुण्य इतने तेज थे कि स्वर्गवास से पहले प.पू.आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के सानिध्य में शांतिधारा, शांतिविधान, पूजा पाठ व श्रावक शिरोमणि बनकर पूज्य आचार्यश्री का पाद प्रक्षालन किया। बाबूजी ने १९९६ में महुआ अतिशय क्षेत्र में प.पू.आचार्यश्री १०८ विद्यासागर जी महाराज का चातुर्मास करवाया था।

बाबूजी का जन्म कोटकाशिम (तिजारा राजस्थान) के पास श्रीमती ज.डावदेवी धर्मपत्नी श्रीमान् चिरंजीलालजी जैन के यहां हुआ था वहाँ से व्यापार के लिए दिल्ली आ गए थे। तत्पश्चात बाबूजी व्यापार के लिए सूरत आ गए थे। बाबूजी ने लगभग ५० वर्ष से सूरत को अपनी कर्मभूमि बना रखी थी।

बाबूजी ने अपने साठ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में सम्पूर्ण भारतवर्ष के विद्वान एवं प्रतिष्ठित ६० व्यक्तियों को आचार्य भरत सागर जी महाराज के संघ सानिध्य में विद्यारत्न से विभूषित किया था।

बाबूजी को १९९१ में समाज रत्न, १९९६ में स्वस्ति भट्टारक श्री चारुकीर्ति महाराज एवं साहू अशोक जैन के हस्ते गुजरात गौरव, २००२ में जैन रत्न, २००३ में श्रावक रत्न व सवाया गुजराती उपाधि से विभूषित किया गया था एवं बाबूजी को गुजरात के राज्यपाल ने ग्लौरी ऑफ गुजरात उपाधि से अलंकृत किया गया था।

बाबूजी सकल सूरत दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष पद पर रहे। इसके अलावा पार्ले पाईन्ट मंदिर, नानपुरा मंदिर के ट्रस्टी व अध्यक्ष रहे। मुनि पुलक सागर जी द्वारा निर्माणाधीन जिनशरणम तीर्थक्षेत्र के अध्यक्ष व भारतवर्षीय दिगम्बर जैन प्राचीन तीर्थक्षेत्र कमेटी के संरक्षक भी थे।

बाबूजी अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पादेवी जैन, पुत्र, पुत्र वधू आशीष-साधना, कमल, अनीता, पौत्र दर्पण, जिनेश, पुत्री दामाद श्रीमती अश्मिता-अजय कुमार जी जैन, नाती संयम व भतीजा-भतीजी का भरापूरा परिवार छो.डकर गये।

बाबूजी के स्वर्गवास से समाज को एक अपूरणीय क्षति हुई है जिसे कभी भी पूरा नहीं किया जा सकता है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार श्रद्धेय बाबूजी के स्वर्गवास पर संवेदना व्यक्त करते हुए परिवार को हिम्मत, धैर्य व बाबूजी के पदचिह्नों पर चलने की मंगल कामना करता है।

स्व.शेठ रतनचंद सखाराम शहा (निंबर्गीकर), सोलापुर का दु:खद निधन

सोलापुर नगर में स्थित श्राविका संस्थानगर के मानद सचिव श्रीमान् शेठ रतनचंद सखाराम शहा जी (उम्र ९६ वर्ष) का दि.२८/०५/२०१५ को सायं ६.४५ पर दु:खद निधन हुआ। सोलापुर के भूषण, अत्यन्त मुनिभक्त, त्यागी, स्वाध्यायप्रेमी, जैन सिद्धांतों के अनुसार अंतिम समय तक श्रावकोचित मूलगुणों का पालन करने वाले, संयमी तथा अत्यन्त समतापूर्वक गृहस्थाश्रम व्यतीत करने वाले श्री रतनचंद काकाजी सचमुच हम सबके प्रेरणास्रोत तथा आदर्श थे। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के परामर्श मंडल के पद को विभूषित करते हुए आपके बहुमूल्य मार्गदर्शन में तेर, सावरगांव, कासारआष्टा, कुंभोज, बाहुबली, कुंथलगिरि आदि तीर्थक्षेत्रों का समुचित विकास व तीर्थोद्धार संभव हुआ है। जैन संस्कृति संरक्षक संघ (जीवराज ग्रंथमाला) तथा श्राविका संस्था को अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले आदरणीय काकाजी के जाने से जैन समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

काकाजी की भव्यात्मा को सद्गति तथा शांति प्राप्त हो, यही हमारी ईश्वर के चरणों में भावपूर्ण विनती।

णायं णरस्स सारो (दंसणपाहुड़, गा.31)। अर्थ- मनुष्य का सार ज्ञान है।

।।श्री ऋषभदेवाय नमः।।

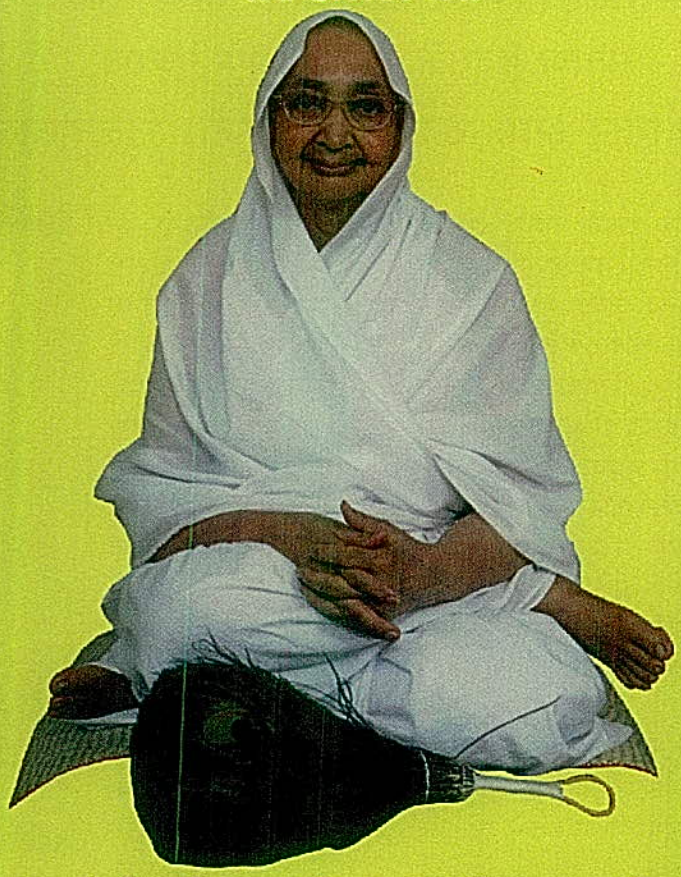

-मार्गदर्शन-
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका
श्री चंदनामती माताजी

-अध्यक्ष-
कर्मयोगी पीठाधीश
स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

चारित्रचक्रवर्ती, प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा की सर्वज्येष्ठ-श्रेष्ठ आर्यिका,
विश्व की सबसे ऊँची अखण्ड पाषाण में 108 फुट विशालकाय प्रतिमा निर्माण की प्रेरणास्रोत, गणिनीप्रमुख

आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ का
मांगीतुंगी में मंगल पदार्पण एवं
ऐतिहासिक वर्षायोग स्थापना

दिनाँक-30 जुलाई 2015, गुरुवार, तिथि-आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी, वी.नि.सं. 2541

स्थान-श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र (नासिक) महा.

कार्यक्रम-30 जुलाई 2015
वर्षायोग स्थापना की सभा
मध्यान्ह 2 बजे
पंचकल्याणक मीटिंग
सायं 6 बजे
नोट - कारणवश कार्यक्रम में परिवर्तन संभावित है।

महानुभावों! पंचमकाल में जैन समाज के लिए यह स्वर्णिम अवसर प्रथम बार प्राप्त होगा, जब विश्व की सबसे ऊँची अखण्ड पाषाण में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा बनकर तैयार हो रही है, जिनका पंचकल्याणक 11 से 17 फरवरी 2016 एवं प्रथम बार महामस्तकाभिषेक 18 फरवरी से प्रारंभ होने जा रहा है। इस ऐतिहासिक प्रतिमा निर्माण की प्रेरणास्रोत गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ का ऐतिहासिक मंगल विहार हस्तिनापुर से 17 मार्च को होकर जुलाई के अंत में मांगीतुंगी मंगल पदार्पण हो रहा है। इस वर्ष 2015 का भव्य चातुर्मास-वर्षायोग स्थापना कराने का हमें सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। कार्यक्रम में समस्त जैन समाज सपरिवार सादर आमंत्रित है।

108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव प्रतिमा का अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव फरवरी 2016 के संदर्भ में विस्तृत जानकारियाँ तीनों चैनल पर देखें।

जिनवाणी चैनल (JINVANI) प्रतिदिन मध्यान्ह 3.30 बजे
पारस चैनल प्रतिदिन रात्रि 9 बजे एवं प्रातः 6 बजे
मंगल कलश चैनल प्रतिदिन मध्यान्ह 4 बजे

निवेदक

108 फुट भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति, मांगीतुंगी

दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी देवस्थान ट्रस्ट मांगीतुंगी (नासिक) महा.

संघपति श्री प्रमोद कुमार जम्मनलाल कासलीवाल एडवोकेट, औरंगाबाद

संपर्क-मो.-09411025124, 09717331008, 09403688133, फोन नं.-02555-286523 Website : www.highestjainidolinworld.com www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : badimurtimangitungi@gmail.com Facebook : statueofahimsa Android App.-statueofahimsa
WhatsApp-08941955502 (पंचकल्याणक एवं पूज्य माताजी से संबंधित सभी जानकारी हेतु इस नम्बर को अपने मोबाइल में Save करके Add me लिखकर वाट्सएप करें)

मनुष्य ने जो वस्तु छोड़ दी है, उससे पैदा होने वाले दुःख से उसने अपने को मुक्त कर लिया है (तिरुवल्लूर)

लॉर्ड पार्श्वनाथ फाउण्डेशन
की अनुपम पहल

सिद्धायतन
एक विश्वस्तरीय चैरिटेबल आध्यात्मिक रिसॉर्ट

उच्च स्तरीय
चैरिटेबल आध्यात्मिक केंद्र

पार्श्वनाथ की पवित्र पहाड़ियों को स्पर्श करता
सम्मेद शिखरजी के चरणों में वन्दन करता
सिद्धायतन है अनुपम आध्यात्मिक स्थल
जहां आभास होता है दिव्यता का हर पल
आधुनिक सुविधाओं से भरपूर है सिद्धायतन
प्रफुल्लित होगा आगंतुकों का तन-मन
अल्पावधि में रहने के लिए उम्र का नहीं है बंधन
दीर्घावधि में रहने के लिए उम्र हो न्यूनतम पचपन
सिद्धायतन कर रहा है आप सभी का स्वागत

सुस्वागतम...
सुस्वागतम...
सुस्वागतम

विशेषताएँ

- ✓ मंदिर एवं स्वाध्याय केंद्र
- ✓ सामुदायिक हॉल
- ✓ उम्र के अनुकूल वास्तुशिल्प
- ✓ केंद्रीकृत रसोई एवं डायनिंग हॉल
- ✓ प्रतिमाधारियों एवं त्यागी व्रतियों के लिए पृथक रसोई
- ✓ चिकित्सा सहायता एवं इनहाउस चिकित्सक एवं नर्सें
- ✓ 24 घंटे एम्बुलेंस सेवा
- ✓ फीजियोथेरपी सहायता
- ✓ पुस्तकालय एवं अनुसंधान केंद्र
- ✓ सुन्दर भू-दृश्य से भरपूर लॉन
- ✓ व्यायामशाला - इंडोर गेम्स
- ✓ 24x7 सुरक्षा

10, प्रिंसेप स्ट्रीट, द्वितीय तल, कोलकाता-700072 दूरभाष - 033 4002 2880/70440 66649/70440 66643 ई-मेल siddhayatan1@gmail.com
वेब - www.siddhayatan.in